भाषा संगम
Bhasha Sangam

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

मई 2022

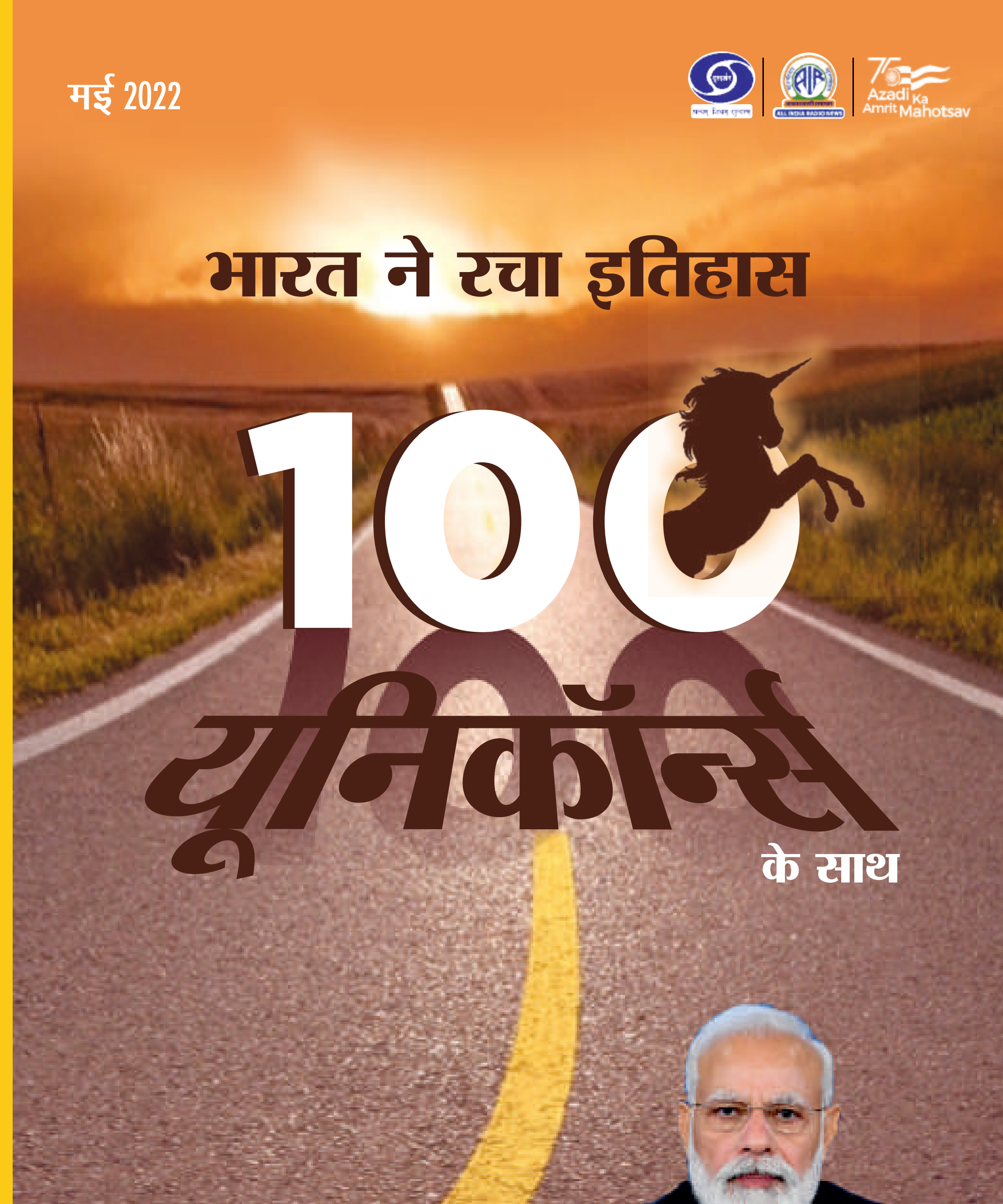

भारत ने रचा इतिहास

100 यूनिकॉर्न्स

के साथ

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का संदेश 1

02 प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख 15

2.1 **भारतीय स्टार्ट-अप्स का त्वरित उदय:** भारत में अब 100 यूनिकॉर्न्स 16

2.1.1 **स्टार्ट-अप की सफलता में पथ प्रदर्शकों की भूमिका – संजीव बिखचंदानी का लेख** 20

2.2 **स्वयं सहायता समूह :** आत्मनिर्भर भारत के लिए महिलाओं का सशक्तीकरण 28

2.3 **एक भारत श्रेष्ठ भारत :** भारत की विविधता का उत्सव 38

2.3.1 **भारत की एकता और श्रेष्ठता के मूल तत्व – प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत का लेख** 44

2.4 **तीर्थ सेवा :** स्वच्छता और अध्यात्म 46

2.5 **योग: विश्व एकता का स्तंभ:** भारत का मानव जाति को अनुपम उपहार 52

2.5.1 **मानसिक और शारीरिक ऊर्जा की जादुई शक्ति है योग - मीराबाई चानू** 54

2.5.2 **अंतरराष्ट्रीय योग दिवस – जावेद अशरफ़ का लेख** 56

2.5.3 **योग: स्वस्थ जीवन का आधार – संजीव मेहता का लेख** 60

2.6 **भारतीय महाकाव्य :** काल और व्योम से परे 62

03 प्रतिक्रियाएँ 69

प्रधानमंत्री का संदेश

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

आज फिर एक बार ‘मन की बात’ के माध्यम से आप सभी कोटि-कोटि मेरे परिवारजनों से मिलने का अवसर मिला है। ‘मन की बात’ में आप सबका स्वागत है। कुछ दिन पहले देश ने एक ऐसी उपलब्धि हासिल की है, जो हम सभी को प्रेरणा देती है। भारत के सामर्थ्य के प्रति एक नया विश्वास जगाती है। आप लोग क्रिकेट के मैदान पर टीम इंडिया के किसी बैट्समैन की सेंचुरी सुन कर खुश होते होंगे, लेकिन भारत ने एक और मैदान में सेंचुरी लगाई है और वो बहुत विशेष है, इस महीने 5 तारीख को देश में यूनिकॉर्न की संख्या 100 के आँकड़े तक पहुँच गई है और आपको तो पता ही है, एक यूनिकॉर्न, यानी कम-से-कम साढ़े सात हज़ार करोड़ रुपये का स्टार्ट-अप। इन यूनिकॉर्न्स का कुल वैल्यूएशन 330 बिलियन डॉलर, यानी 25 लाख करोड़ रुपयों से भी ज़्यादा है। निश्चित रूप से ये बात हर भारतीय के लिए गर्व करने वाली बात है। आपको यह जानकर भी हैरानी होगी कि हमारे कुल यूनिकॉर्न में से 44 पिछले साल बने थे। इतना ही नहीं, इस वर्ष के 3-4 महीने में ही 14 और नए यूनिकॉर्न बन गए। इसका मतलब यह हुआ कि ग्लोबल पैंडेमिक के इस दौर में भी हमारे स्टार्ट-अप्स, वेल्थ और वैल्यू, क्रिएट करते रहे हैं। इंडियन यूनिकॉर्न का एवरेज एनुअल ग्रोथ रेट यूएसए, यूके और अन्य कई देशों से भी ज़्यादा है। एनालिस्ट्स का तो ये भी कहना है कि आने वाले वर्षों में इस संख्या में तेज उछाल देखने को मिलेगी। एक अच्छी बात ये भी है कि हमारे यूनिकॉर्न्स डायवर्सिफाइंग हैं। ये ई-कॉमर्स, फिनटेक, एडटेक, बायोटेक जैसे कई क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। एक और बात जिसे मैं ज़्यादा अहम मानता हूँ वो यह है कि स्टार्ट-अप्स की दुनिया न्यू इंडिया की स्पिरिट को रिफ्लेक्ट कर रही है। आज, भारत का स्टार्ट-अप इकोसिस्टम सिर्फ बड़े शहरों

डेस्टिनेशन इंडिया: गेटवे टू ग्रोथ - दुबई में आयोजित भारतीय स्टार्ट-अप इकोसिस्टम पर गोलमेज़ सम्मेलन का आयोजन

तक ही सीमित नहीं है, छोटे-छोटे शहरों और कस्बों से भी आंत्रप्रेन्योर्स सामने आ रहे हैं। इससे पता चलता है कि भारत में जिसके पास इनोवेटिव आइडिया है, वो वेल्थ क्रिएट कर सकता है।

साथियो, देश की इस सफलता के पीछे, देश की युवा-शक्ति, देश के टैलेंट और सरकार, सभी मिलकर प्रयास कर रहे हैं, हर किसी का योगदान है, लेकिन, इसमें एक और बात महत्वपूर्ण है, वह है स्टार्ट-अप वर्ल्ड में, राइट मेंटरिंग यानी सही मार्गदर्शन। एक अच्छा मेंटर स्टार्ट-अप को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकता है। वह फाउंडर्स को राइट डिसिज़न के लिए हर तरह से गाइड कर सकता है। मुझे, इस बात का गर्व है कि भारत में ऐसे बहुत से मेंटर्स हैं जिन्होंने स्टार्ट-अप्स को आगे बढ़ाने के लिए खुद को समर्पित कर दिया है।

श्रीधर वेम्बूजी को हाल ही में पद्म सम्मान मिला है। वह खुद एक सफल आंत्रप्रेन्योर हैं, लेकिन अब उन्होंने, दूसरे आंत्रप्रेन्योर को ग्रूम करने का भी बीड़ा उठाया है। श्रीधरजी ने अपना काम ग्रामीण इलाके से शुरू किया है। वे ग्रामीण युवाओं को गाँव में ही रहकर इस क्षेत्र में कुछ करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। हमारे यहाँ मदन पड़ाकी जैसे लोग भी हैं जिन्होंने रूरल आंत्रप्रेन्योर को बढ़ावा देने के लिए 2014 में वन-ब्रिज नाम का प्लेटफॉर्म बनाया था। आज, वन-ब्रिज दक्षिण और पूर्वी-भारत के 75 से अधिक जिलों में मौजूद है। इससे जुड़े 9000 से अधिक रूरल आंत्रप्रेन्योर्स ग्रामीण उपभोक्ताओं को अपनी सेवाएँ उपलब्ध करा रहे हैं। मीरा शेनॉयजी भी ऐसी ही एक मिसाल हैं। वो रूरल, ट्राइबल और डिसएबल्ड यूथ के लिए मार्केट लिंक्ड स्किल्स ट्रेनिंग के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं। मैंने यहाँ तो कुछ ही नाम लिए हैं, लेकिन आज हमारे बीच मेंटर्स की कमी नहीं है। हमारे लिए यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि स्टार्ट-अप के लिए आज देश में एक पूरा सपोर्ट सिस्टम तैयार हो रहा है। मुझे विश्वास है कि आने वाले समय में हमें भारत के स्टार्ट-अप वर्ल्ड के प्रगति की नई उड़ान देखने को मिलेगी।

साथियो, कुछ दिनों पहले मुझे एक ऐसी इंट्रेस्टिंग और अट्रैक्टिव चीज़ मिली, जिसमें देशवासियों की क्रिएटीविटी और उनके आर्टिस्टिक टैलेंट का रंग भरा है। एक उपहार है, जिसे तमिलनाडु के तंजावुर के एक सेल्फ-हेल्प ग्रुप ने मुझे भेजा है। इस उपहार में भारतीयता की सुगंध है और मातृ-शक्ति के आशीर्वाद – मुझ पर उनके स्नेह की भी झलक है। यह एक स्पेशल तंजावुर डॉल है, जिसे जीआई टैग भी मिला हुआ है। मैं तंजावुर सेल्फ-हेल्प ग्रुप को विशेष धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने

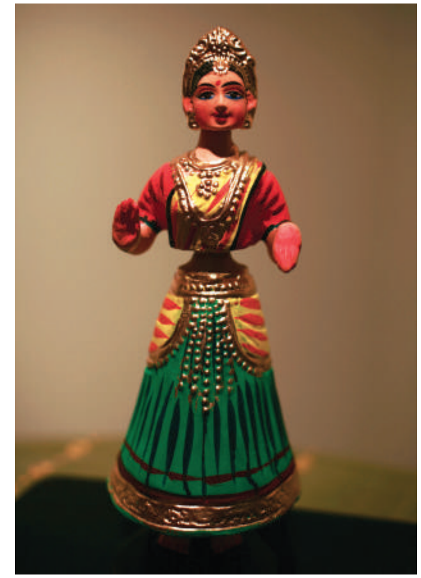

तंजावुर डॉल

मुझे स्थानीय संस्कृति में रचे-बसे इस उपहार को भेजा। वैसे साथियो, ये तंजावुर डॉल जितनी खूबसूरत होती है, उतनी ही खूबसूरती से ये महिला सशक्तीकरण की नई गाथा भी लिख रही है। तंजावुर में महिलाओं के सेल्फ-हेल्प ग्रुप्स के स्टोर और कियोस्क भी खुल रहे हैं। इसकी

सेल्फ-हेल्प ग्रुप की प्रदर्शनी में प्रधानमंत्री

वजह से कितने ही गरीब परिवारों की ज़िंदगी बदल गई है। ऐसे कियोस्क और स्टोर्स की सहायता से महिलाएँ अब अपने प्रोडक्ट, ग्राहकों को सीधे बेच पा रही हैं। इस पहल को 'थरगईगल कइविनई पोरुत्तकल विरप्पनई अंगाड़ी' नाम दिया गया है। ख़ास बात ये है कि इस पहल से 22 सेल्फ-हेल्प ग्रुप जुड़े हुए हैं। आपको ये भी जानकर अच्छा लगेगा कि महिला स्वयं सहायता समूह के ये स्टोर तंजावुर में बहुत ही प्राइम लोकेशन पर खुले हैं। इनकी देखरेख की पूरी ज़िम्मेदारी भी महिलाएँ ही उठा रही हैं। ये महिला सेल्फ-हेल्प ग्रुप तंजावुर डॉल और ब्राँज लैम्प जैसे जीआई प्रोडक्ट के अलावा खिलौने, मैट और आर्टिफिशियल ज्वेलरी भी बनाते हैं। ऐसे स्टोर की वजह से जीआई प्रोडक्ट के साथ-साथ हैंडिक्राफ्ट के प्रोडक्ट्स की बिक्री में काफी तेजी देखने को मिली है। इस मुहिम की वजह से न केवल कारीगरों को बढ़ावा मिला है, बल्कि महिलाओं की आमदनी बढ़ने से उनका सशक्तीकरण भी हो रहा है। मेरा 'मन की बात' के श्रोताओं से भी एक आग्रह है। आप, अपने क्षेत्र में ये पता लगाएँ कि कौन-सी महिला सेल्फ-हेल्प ग्रुप काम कर रही हैं। उनके प्रोडक्ट्स के बारे में भी आप जानकारी जुटाएँ और ज़्यादा-से-ज़्यादा इन उत्पादों को उपयोग में लाएँ। ऐसा करके, आप सेल्फ-हेल्प ग्रुप की आय बढ़ाने में तो मदद करेंगे ही, 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' को भी गति देंगे।

साथियो, हमारे देश में कई सारी भाषा, लिपियाँ और बोलियों का समृद्ध ख़ज़ाना है। अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग पहनावा, खानपान और संस्कृति, यह हमारी पहचान है। यह डायवर्सिटी, यह विविधता, एक राष्ट्र के रूप में हमें अधिक सशक्त करती है, और एकजुट रखती है। इसी से जुड़ा एक बेहद प्रेरक उदाहरण है एक बेटी कल्पना का, जिसे मैं आप सभी के साथ साझा करना चाहता हूँ। उनका नाम कल्पना है, लेकिन उनका प्रयास 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की सच्ची भावना से भरा हुआ है। दरअसल, कल्पना ने हाल ही में कर्नाटक में अपनी 10वीं की परीक्षा पास की है, लेकिन उनकी सफलता की बेहद ख़ास बात ये है कि कल्पना को कुछ समय पहले तक कन्नड़ भाषा ही नहीं आती थी। उन्होंने न सिर्फ तीन महीने में कन्नड़ भाषा सीखी, बल्कि, 92 नम्बर भी लाकर दिखाए। आपको यह जानकर हैरानी हो रही होगी, लेकिन ये सच है। उनके बारे में और भी कई बातें ऐसी हैं जो आपको हैरान भी करेंगी और प्रेरणा भी देंगी। कल्पना, मूल रूप से उत्तराखंड के जोशीमठ की रहने वाली हैं। वे पहले टीबी से पीड़ित रही थीं और जब वे तीसरी कक्षा में थीं तभी उनकी आँखों की रोशनी भी चली गई थी, लेकिन कहते हैं न 'जहाँ चाह-वहाँ राह'। कल्पना बाद में मैसूरु की रहने वाली प्रोफ़ेसर तारामूर्ति के सम्पर्क में आईं, जिन्होंने न सिर्फ़ उन्हें प्रोत्साहित किया बल्कि हर तरह से उनकी मदद भी की। आज, वो अपनी मेहनत से हम सबके लिए एक उदाहरण बन गई हैं। मैं, कल्पना को उनके हौसले के लिए बधाई देता हूँ। इसी तरह, हमारे देश में कई ऐसे लोग भी हैं जो देश की भाषाई विविधता को मज़बूत करने का काम कर रहे हैं। ऐसे ही एक साथी हैं, पश्चिम बंगाल में पुरुलिया के श्रीपति टूडूजी। टूडूजी, पुरुलिया की सिद्धो-कानू-बिरसा यूनिवर्सिटी में संथाली भाषा के प्रोफ़ेसर हैं। उन्होंने, संथाली समाज के

लिए उनकी अपनी 'ओल चिकी' लिपि में देश के संविधान की कॉपी तैयार की है। श्रीपति टूडूजी कहते हैं कि हमारा संविधान हमारे देश के हर एक नागरिक को उनके अधिकार और कर्त्तव्य का बोध कराता है। इसलिए, प्रत्येक नागरिक को इससे परिचित होना ज़रूरी है। इसलिए, उन्होंने संथाली समाज के लिए उनकी अपनी लिपि में संविधान की कॉपी तैयार करके भेंट-सौगात के रूप में दी है। मैं, श्रीपतिजी की इस सोच और उनके प्रयासों की सराहना करता हूँ। ये 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना का जीवंत उदाहरण है। इस भावना को आगे बढ़ाने वाले ऐसे बहुत से प्रयासों के बारे में आपको 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की वेबसाइट पर भी जानकारी मिलेगी। यहाँ आपको खान-पान, कला, संस्कृति, पर्यटन समेत ऐसे कई विषयों पर एक्टिविटीज़ के बारे में पता चलेगा। आप, इन एक्टिविटीज़ में हिस्सा भी ले सकते हैं, इससे आपको अपने देश के बारे में जानकारी भी मिलेगी और आप देश की विविधता को महसूस भी करेंगे।

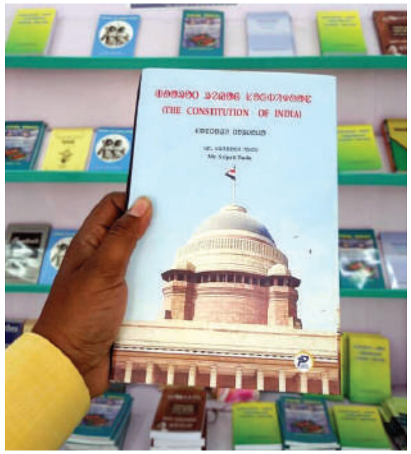

'ओल चिकी' लिपि (संथाली) में देश के संविधान की कॉपी

मेरे प्यारे देशवासियो,

तीर्थ सेवा
स्वच्छता और अध्यात्म

इस समय हमारे देश में उत्तराखंड के 'चार-धाम' की पवित्र यात्रा चल रही है। 'चार-धाम' और ख़ासकर केदारनाथ में हर दिन हज़ारों की संख्या में श्रद्धालु वहाँ पहुँच रहे हैं। लोग अपनी 'चार-धाम यात्रा' के सुखद अनुभव शेयर कर रहे हैं लेकिन, मैंने ये भी देखा कि श्रद्धालु केदारनाथ में कुछ यात्रियों द्वारा फैलाई जा रही गंदगी की वजह से बहुत दुखी भी हैं। सोशल मीडिया पर भी कई लोगों ने अपनी बात रखी है। हम पवित्र यात्रा में जाएँ और वहाँ गंदगी का ढेर हो, ये ठीक नहीं। लेकिन साथियो, इन शिकायतों के बीच कई अच्छी तस्वीरें भी देखने को मिल रही हैं। जहाँ श्रद्धा है, वहाँ सृजन और सकारात्मकता भी है। कई श्रद्धालु ऐसे भी हैं जो बाबा केदार के धाम में दर्शन-पूजन के साथ-साथ स्वच्छता की साधना भी कर रहे हैं। कोई अपने ठहरने के स्थान के पास सफ़ाई कर रहा है, तो कोई यात्रा मार्ग से कूड़ा-कचरा साफ़ कर रहा है। स्वच्छ भारत की अभियान टीम के साथ मिलकर कई संस्थाएँ और स्वयंसेवी संगठन भी वहाँ काम कर रहे हैं। साथियो, हमारे यहाँ जैसे तीर्थ-यात्रा का महत्व होता है, वैसे ही तीर्थ-सेवा का भी महत्व बताया गया है, और मैं तो ये भी कहूँगा, तीर्थ-सेवा के बिना तीर्थ-यात्रा भी अधूरी है। देवभूमि उत्तराखंड में से कितने ही लोग हैं जो

केदारनाथ में पूजा-अर्चना करते प्रधानमंत्री

स्वच्छता और सेवा की साधना में लगे हुए हैं। रुद्र प्रयाग के रहने वाले श्रीमान मनोज बैंजवालजी से भी आपको बहुत प्रेरणा मिलेगी। मनोजजी ने पिछले पच्चीस वर्षों से पर्यावरण की देख-रेख का बीड़ा उठा रखा है। वे स्वच्छता की मुहिम चलाने के साथ ही पवित्र स्थलों को प्लास्टिक मुक्त करने में भी जुटे रहते हैं। वहीं गुप्तकाशी में रहने वाले - सुरेंद्र बगवाड़ीजी ने भी स्वच्छता को अपना जीवनमंत्र बना लिया है। वे गुप्तकाशी में नियमित रूप से सफ़ाई कार्यक्रम चलाते हैं और मुझे पता चला है कि इस अभियान का नाम भी उन्होंने 'मन की बात' रख लिया है। ऐसे ही देवर गाँव की चम्पा देवी पिछले तीन साल से अपने गाँव की महिलाओं को कूड़ा प्रबंधन, यानी – वेस्ट मैनेजमेंट सिखा रही हैं। चम्पाजी ने सैकड़ों पेड़ भी लगाए हैं और उन्होंने अपने परिश्रम से एक हरा-भरा वन तैयार कर दिया है। साथियो, ऐसे ही लोगों के प्रयासों से देव भूमि और तीर्थों की वो दैवीय अनुभूति बनी हुई है, जिसे अनुभव करने के लिए हम वहाँ जाते हैं, इस देवत्व और आध्यात्मिकता को बनाए रखने की ज़िम्मेदारी हमारी भी तो है। अभी हमारे देश में 'चारधाम यात्रा' के साथ-साथ आने वाले समय में 'अमरनाथ यात्रा', 'पंढरपुर यात्रा' और 'जगन्नाथ यात्रा' जैसे कई यात्राएँ होंगी। सावन मास में तो शायद हर गाँव में कोई-न-कोई मेला लगता है।

साथियो, हम जहाँ कहीं भी जाएँ, इन तीर्थ क्षेत्रों की गरिमा बनी रहे। शुचिता, साफ़-सफ़ाई, एक पवित्र वातावरण हमें इसे कभी नहीं भूलना है, उसे ज़रूर बनाए रखें और इसीलिए ज़रूरी है कि हम स्वच्छता के संकल्प को याद रखें। कुछ दिन बाद ही, 5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाता है। पर्यावरण को लेकर हमें अपने आस-पास सकारात्मक अभियान चलाने चाहिए और ये निरंतर करने वाला काम है। आप इस बार सब को साथ जोड़ कर-स्वच्छता और वृक्षारोपण के लिए कुछ प्रयास ज़रूर करें। आप खुद भी पेड़ लगाइए और दूसरों को भी प्रेरित करिए।

मेरे प्यारे देशवासियो,

अगले महीने 21 जून को हम 8वाँ 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' मनाने वाले हैं। इस बार 'योग दिवस' की थीम है – योगा फॉर ह्यूमेनिटी। मैं आप सभी से 'योग दिवस' को बहुत ही उत्साह के साथ मनाने का आग्रह करूँगा। हाँ! कोरोना से जुड़ी ज़रूरी सावधानियाँ भी बरतें, वैसे अब तो पूरी दुनिया में कोरोना को लेकर हालात पहले से कुछ बेहतर लग रहे हैं, अधिक-से-अधिक वैक्सीनेशन कवरेज की वजह से अब लोग पहले से कहीं ज़्यादा बाहर भी निकल रहे हैं इसलिए पूरी दुनिया में 'योग दिवस' को लेकर काफी तैयारियाँ भी देखने को मिल रही हैं। कोरोना महामारी ने हम सभी को यह एहसास भी कराया है कि हमारे जीवन में स्वास्थ्य का कितना अधिक महत्व है और योग इसमें कितना बड़ा माध्यम है। लोग यह महसूस कर रहे हैं कि योग से फिजिकल, स्प्रिचुअल और इंटेलेक्चुअल वेल बिइंग को भी कितना बढ़ावा मिलता है। विश्व के टॉप बिज़नेस पर्सन से लेकर फिल्म और स्पोर्ट्स पर्सनैलिटीज़ तक, स्टूडेंट्स से लेकर सामान्य मानवी तक सभी योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि दुनिया भर में योग की बढ़ती लोकप्रियता को देखकर आप सभी को बहुत अच्छा लगता होगा। साथियो, इस बार देश-विदेश में 'योग दिवस' पर होने वाले कुछ बेहद इनोवेटिव उदाहरणों के बारे में मुझे जानकारी मिली है। इन्हीं में से एक है गार्जियन रिंग - एक बड़ा ही यूनिक प्रोग्राम होगा। इसमें मूवमेंट ऑफ सन को सेलिब्रेट किया जाएगा, यानी सूरज जैसे-जैसे यात्रा करेगा, धरती के अलग-अलग हिस्सों से हम योग के जरिए उसका स्वागत करेंगे। अलग-अलग देशों में इंडियन मिशन्स वहाँ के लोकल टाइम के मुताबिक सूर्योदय के समय योग कार्यक्रम आयोजित करेंगे। एक देश के बाद दूसरे देश से कार्यक्रम शुरू होगा। पूरब से पश्चिम तक निरंतर यात्रा चलती रहेगी, फिर ऐसे ही ये आगे बढ़ता रहेगा। इन कार्यक्रमों की स्ट्रिमिंग भी इसी तरह एक के बाद एक जुड़ती जाएगी, यानी ये

'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' पर योग करते हुए श्री नरेन्द्र मोदी

एक तरह का 'रिले योगा स्ट्रिमिंग इवेंट' होगा। आप भी इसे जरूर देखिएगा।

साथियो, हमारे देश में इस बार 'अमृत महोत्सव' को ध्यान में रखते हुए देश के 75 प्रमुख स्थानों पर भी 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' का आयोजन होगा। इस अवसर पर कई संगठन और देशवासियों ने अपने-अपने स्तर पर अपने-अपने क्षेत्र की ख़ास जगहों पर कुछ न कुछ इनोवेटिव करने की तैयारी कर रहे हैं। मैं, आपसे भी ये आग्रह करूँगा, इस बार योग दिवस मनाने के लिए आप अपने शहर, कस्बे या गाँव की किसी ऐसी जगह को चुनें, जो सबसे ख़ास हो। ये जगह कोई प्राचीन मंदिर और पर्यटन केंद्र हो सकता है, या फिर किसी प्रसिद्ध नदी, झील या तालाब का किनारा भी हो सकता है। इससे योग के साथ-साथ आपके क्षेत्र की पहचान भी बढ़ेगी और पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। इस समय 'योग दिवस' को लेकर 100 डे काउंटडाउन भी जारी है, या यूँ कहें कि निजी और सामाजिक प्रयासों से जुड़े कार्यक्रम तीन महीने पहले ही शुरू हो चुके हैं। जैसा कि दिल्ली में 100वें दिन और 75वें दिन के काउंटडाउन प्रोग्राम्स हुए हैं। वहीं असम के शिवसागर में 50वें और हैदराबाद में 25वें काउंटडाउन इवेंट आयोजित किए गए। मैं चाहूँगा कि आप भी अपने यहाँ अभी से 'योग दिवस' की तैयारियाँ शुरू कर दीजिए। ज़्यादा से ज़्यादा लोगों से मिलिए, हर किसी को 'योग दिवस' के कार्यक्रम में जुड़ने के लिए आग्रह कीजिए, प्रेरित कीजिए। मुझे पूरा भरोसा है कि आप सभी 'योग दिवस' में बढ़-चढ़कर के हिस्सा लेंगे, साथ ही योग को अपने दैनिक जीवन में भी अपनाएँगे।

साथियो, कुछ दिन पहले मैं जापान गया था। अपने कई कार्यक्रमों के बीच मुझे कुछ शानदार शख़्सियतों से मिलने का मौका मिला। मैं 'मन की बात' में आपसे उनके बारे में चर्चा करना चाहता हूँ। वे लोग हैं तो जापान के, लेकिन भारत के प्रति इनमें गज़ब का लगाव और प्रेम है। इनमें से एक हैं हिरोशि कोइकेजी, जो एक जाने-माने आर्ट डायरेक्टर हैं। आपको ये जानकार बहुत ही ख़ुशी होगी कि इन्होंने महाभारत प्रोजेक्ट को डायरेक्ट किया है। इस प्रोजेक्ट की शुरुआत कम्बोडिया में हुई थी और पिछले 9 सालों से ये निरंतर जारी है! हिरोशि कोइकेजी हर काम बहुत ही अलग तरीके से करते हैं। वे हर साल एशिया के किसी देश की यात्रा करते हैं और वहाँ लोकल आर्टिस्ट और म्यूजिशियन के साथ महाभारत के कुछ हिस्सों को प्रोड्यूस करते हैं। इस प्रोजेक्ट के माध्यम से उन्होंने इंडिया, कम्बोडिया और इंडोनेशिया सहित नौ देशों में प्रोडक्शन किए हैं और स्टेज परफोर्मेंस भी दी है। हिरोशि कोइकेजी उन कलाकारों को एक साथ लाते हैं, जिनका क्लासिकल और ट्रेडिशनल एशियन परफॉर्मिंग आर्ट में डायवर्स बैकग्राउंड रहा है। इस वजह से उनके काम में विविध रंग देखने को मिलते हैं। इंडोनेशिया, थाइलैंड, मलेशिया और जापान के परफॉर्मर्स जावा नृत्य, बाली नृत्य, थाई नृत्य के जरिए इसे और आकर्षक बना देते हैं। ख़ास बात ये है कि इसमें प्रत्येक परफॉर्मर अपनी ही मातृ-भाषा में बोलता है और कोरियोग्राफी बहुत ही ख़ूबसूरती से इस विविधता को प्रदर्शित करती है और म्यूजिक की डायवर्सिटी इस प्रोडक्शन को और जीवंत बना देती है। उनका उद्देश्य इस बात को सामने लाना है कि हमारे समाज में डायवर्सिटी और को-एग्ज़िस्टेंस का क्या महत्व है और शांति का रूप वास्तव में कैसा होना चाहिए। इनके अलावा मैं जापान में जिन अन्य दो लोगों से मिला, वे हैं आत्सुशि मात्सुओजी और केन्जी योशीजी। ये दोनों ही टेम प्रोडक्शन कम्पनी से जुड़े हैं। इस कम्पनी का संबंध रामायण की उस जापानी एनिमेशन फिल्म से है जो 1993 में रिलीज हुई थी। यह प्रोजेक्ट जापान के बहुत ही मशहूर फिल्म डायरेक्टर युगो साकोजी से जुड़ा हुआ था। करीब 40 साल पहले, 1983 में उन्हें पहली बार रामायण के बारे में पता चला था। 'रामायण' उनके हृदय को छू गई, जिसके बाद उन्होंने इस पर गहराई से रिसर्च शुरू कर दी। इतना ही नहीं उन्होंने जापानी भाषा में रामायण के 10 वर्जन्स पढ़ डाले, और वे इतने पर ही नहीं रुके, वे इसे एनिमेशन पर भी उतारना चाहते थे। इसमें इंडियन एनिमेटर्स ने भी उनकी

महाभारत प्रोजेक्ट के निदेशक हिरोशि कोइके

काफ़ी मदद की। उन्हें फिल्म में दिखाए गए भारतीय रीति-रिवाजों और परम्पराओं के बारे में गाइड किया गया। उन्हें बताया गया कि भारत में लोग धोती कैसे पहनते हैं, साड़ी कैसे पहनते हैं, बाल कैसे बनाते हैं। बच्चे परिवार के अंदर एक-दूसरे का मान-सम्मान कैसे करते हैं, आशीर्वाद की परम्परा क्या होती है। प्रात: उठ करके अपने घर के जो सिनियर हैं उनको प्रणाम करना, उनके आशीर्वाद लेना - ये सारी बातें अब 30 सालों के बाद ये एनिमेशन फिल्म फिर से 4K में रि-मास्टर की जा रही है। इस प्रोजेक्ट के जल्द ही पूरा होने की संभावना है। हमसे हज़ारों किलोमीटर दूर जापान में बैठे लोग जो न हमारी भाषा जानते हैं, जो न हमारी परम्पराओं के बारे में उतना जानते हैं, उनका हमारी संस्कृति के लिए समर्पण, ये श्रद्धा, ये आदर बहुत ही प्रशंसनीय है - कौन हिन्दुस्तानी इस पर गर्व नहीं करेगा?

युगो साको द्वारा निर्देशित एनिमेटेड फिल्म 'रामायण' का एक दृश्य

मेरे प्यारे देशवासियो,

स्व से ऊपर उठकर समाज की सेवा का मंत्र, सेल्फ फॉर सोसाइटी का मंत्र, हमारे संस्कारों का हिस्सा है। हमारे देश में अनगिनत लोग इस मंत्र को अपना जीवन ध्येय बनाए हुए हैं। मुझे आंध्र प्रदेश में मर्कापुरम में रहने वाले एक साथी राम भूपाल रेड्डीजी के बारे में जानकारी मिली। आप जानकर हैरान रह जाएँगे कि राम भूपाल रेड्डीजी ने रिटायरमेंट के बाद मिलने वाली अपनी सारी कमाई बेटियों की शिक्षा के लिए दान कर दी है। उन्होंने, करीब–करीब 100 बेटियों के लिए 'सुकन्या समृद्धि योजना' के तहत खाते खुलवाए और उसमें अपने 25 लाख से ज़्यादा रुपये जमा करवा दिए। ऐसे ही सेवा का एक और उदाहरण यू.पी. में आगरा के कचौरा गाँव का है। काफी साल से इस गाँव में मीठे पानी की किल्लत थी। इस बीच गाँव के एक किसान कुंवर सिंह को गाँव से 6-7 किलोमीटर दूर अपने खेत में मीठा पानी मिल गया। यह उनके लिए बहुत ख़ुशी की बात थी। उन्होंने सोचा क्यों न इस पानी से बाकी सभी गाँववासियों की भी सेवा की जाए। लेकिन, खेत से गाँव तक पानी ले जाने के लिए 30-32 लाख रुपये चाहिए थे। कुछ समय बाद कुंवर सिंह के छोटे भाई श्याम सिंह सेना से रिटायर होकर गाँव आए तो उन्हें ये बात पता चली। उन्होंने रिटायरमेंट पर मिली अपनी सारी धनराशि इस काम के लिए सौंप दी और खेत से गाँव तक पाइपलाइन बिछाकर गाँव वालों के लिए मीठा पानी पहुँचाया। अगर लगन हो, अपने कर्त्तव्यों के प्रति गम्भीरता हो तो एक व्यक्ति भी कैसे पूरे समाज का भविष्य बदल सकता है, ये प्रयास इसकी बड़ी प्रेरणा है। हम कर्त्तव्य पथ पर चलते हुए ही समाज को सशक्त कर सकते हैं, देश को सशक्त कर सकते हैं। आजादी के इस 'अमृत महोत्सव' में यही हमारा संकल्प होना चाहिए और यही हमारी साधना भी होनी चाहिए और जिसका एक ही मार्ग है - कर्त्तव्य, कर्त्तव्य और कर्त्तव्य।

मेरे प्यारे देशवासियो,

आज 'मन की बात' में हमने समाज से जुड़े कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। आप सब अलग-अलग विषयों से जुड़े महत्वपूर्ण सुझाव मुझे भेजते हैं और उन्हीं के आधार पर हमारी चर्चा आगे बढती है। 'मन की बात' के अगले संस्करण के लिए अपने सुझाव भेजना भी मत भूलिएगा। इस समय आज़ादी के अमृत महोत्सव से जुड़े जो कार्यक्रम चल रहे हैं, जिन आयोजन में आप शामिल हो रहे हैं, उनके बारे में भी मुझे ज़रूर बताइए। Namo app और MyGov पर मुझे आपके सुझावों का इंतज़ार रहेगा। अगली बार हम एक बार फिर मिलेंगे, फिर से देशवासियों से जुड़े ऐसे ही विषयों पर बातें करेंगे। आप, अपना ख़्याल रखिए और अपने आस-पास सभी जीव-जंतुओं का भी ख़्याल रखिए। गर्मियों के इस मौसम में आप पशु-पक्षियों के लिए खाना-पानी देने का अपना मानवीय दायित्व भी निभाते रहें- ये ज़रूर याद रखिएगा तब तक के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

भारतीय स्टार्ट-अप्स का त्वरित उदय

भारत में अब 100 यूनिकॉर्न्स

"इस महीने की 5 तारीख को देश में यूनिकॉर्न की संख्या 100 के आँकड़े पर पहुँच गई है और आपको तो पता ही है कि एक यूनिकॉर्न कम से कम साढ़े सात हजार करोड़ रुपये का स्टार्ट-अप है। इन यूनिकॉर्न की कुल वैल्यूएशन 330 बिलियन डॉलर यानी 25 लाख करोड़ रुपये से भी ज़्यादा है। निश्चित रूप से यह हर भारतीय के लिए गर्व की बात है।"

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के सम्बोधन में)

"भारत में 100 यूनिकॉर्न का उदय, वह भी इतने रिकॉर्ड समय में, भारत की नई उमंग को दर्शाता है। उद्यमिता की इस भावना को मज़बूती से आगे बढ़ाने के लिए माननीय प्रधानमंत्रीजी की मैं बहुत आभारी हूँ। इससे, इतने कम समय में, भारत का स्टार्ट-अप्स के लिए तीसरे सबसे बड़े इकोसिस्टम के रूप में उदय हुआ है।"

- देबजानी घोष
अध्यक्ष, नैसकॉम

भारत में पिछले दशक में स्टार्ट-अप की संख्या में भारी वृद्धि देखी गई है। देश में मई, 2022 में 100वाँ यूनिकॉर्न बना। भारत में पहला यूनिकॉर्न 2011 में बना था और केवल 11 वर्षों में 100 से अधिक यूनिकॉर्न की उपलब्धि ने भारत को संयुक्त राज्य अमरीका और चीन के बाद दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट-अप बेस बना दिया है। एक यूनिकॉर्न वह स्टार्ट-अप होता है जिसका मूल्यांकन एक बिलियन अमरीकी डॉलर या लगभग साढ़े सात हजार करोड़ रुपये से अधिक का हो जाता है। 100 भारतीय यूनिकॉर्न का कुल मूल्यांकन 330 अरब डॉलर यानी 25 लाख करोड़ रुपये से अधिक है।

महामारी के बीच पिछले साल रिकॉर्ड 44 यूनिकॉर्न स्थापित किए गए थे। इस साल तीन-चार महीनों में 14 और नए यूनिकॉर्न बने। इसका मतलब यह है कि वैश्विक महामारी के इस दौर में भी हमारे स्टार्ट-अप धन और मूल्य सृजन कर रहे हैं।

2016 में, सरकार ने देश में नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एक मज़बूत पारिस्थितिकी तंत्र बनाने हेतु स्टार्ट-अप इंडिया पहल के साथ देश के जनसांख्यिकीय लाभांश का फायदा उठाने का अवसर देखा। भारत सरकार ने स्टार्ट-अप इंडिया पहल के अंतर्गत स्टार्ट-अप्स को वित्तीय सहायता प्रदान करने और निजी निवेश को बढ़ावा देने के लिए सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में *स्टार्ट-अप इंडिया सीड फंड और फंड ऑफ फंड्स शुरू किए हैं।*

भारत में नवाचार केवल कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है, अब तक उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) ने सभी 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को शामिल करते हुए 647 जिलों में 70,816 स्टार्ट-अप को मान्यता दी है। मान्यताप्राप्त 50 प्रतिशत स्टार्ट-अप, टियर-II और टियर-III शहरों से हैं, जिनमें से प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेश से कम से कम एक स्टार्ट-अप है। यह इस बात को भी रेखांकित करता है कि उद्यमशीलता की भावना पूरे देश में मौजूद है।

स्टार्ट-अप न केवल शहरी आबादी की चुनौतियों के लिए नए युग के समाधान ढूँढ रहे हैं बल्कि सबसे चुनौतीपूर्ण मुद्दों में शामिल कृषि उत्पादकता, पशुधन आरोग्यता आदि जैसे क्षेत्रों के लिए उच्च तकनीक समाधानों के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को उबार रहे हैं। वर्तमान में देश में 700 से अधिक कृषि स्टार्ट-अप काम कर रहे हैं। एक उल्लेखनीय उदाहरण, ड्रोन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचार है जो सुरक्षा, दूरस्थ वितरण और यहाँ तक कि कृषि के क्षेत्र में नए रास्ते खोल रहा है।

भारत ड्रोन महोत्सव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

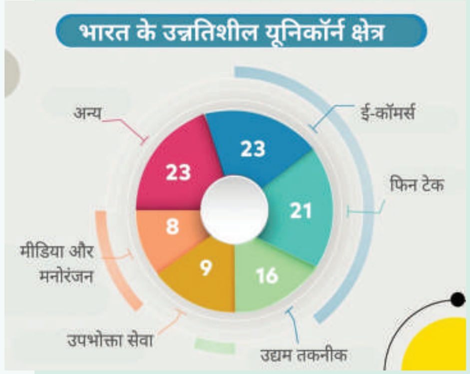

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में इस बात पर प्रकाश डाला कि स्टार्ट-अप की दुनिया में सही मार्गदर्शन महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, "देश की इस सफलता के पीछे देश की युवा-शक्ति, प्रतिभा और सरकार, सभी मिलकर प्रयास कर रहे हैं। हर कोई योगदान दे रहा है। लेकिन, एक और चीज़ जो स्टार्ट-अप की दुनिया में महत्वपूर्ण है, वह है सही मेंटरिंग, यानी सही मार्गदर्शन।" उन्होंने पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित **श्रीधर वेम्बू** का उल्लेख किया, जिन्होंने ग्रामीण क्षेत्र से अपनी उद्यमशीलता की यात्रा शुरू की और अब ग्रामीण युवाओं को प्रोत्साहित कर रहे हैं। **मीरा शेनॉय** ग्रामीण, जनजातियों और दिव्यांग युवाओं के लिए बाज़ार से जुड़े कौशल प्रशिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं। ग्रामीण उद्यमियों का नेटवर्क बनाने के लिए **मदन पड़ाकी** कार्यरत हैं ताकि गाँव भी आत्मनिर्भर बन सकें।

स्टार्ट-अप्स ने सरकार के आत्मनिर्भर भारत की पहल में सक्रिय रूप से योगदान दिया है। भारत में हर घंटे लगभग 4 स्टार्ट-अप को मान्यता दी जाती है, जिनमें 45 प्रतिशत टियर-II और टियर-III शहरों से संबंधित हैं और 46 प्रतिशत स्टार्ट-अप महिला उद्यमियों द्वारा स्थापित किए गए हैं।

इसके अलावा, भारत निरंतर यूनिकॉर्न के युग से डेकाकोर्न के युग में बदल रहा है। डेकाकॉर्न वह कम्पनी होती है जिसने 10 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक का मूल्यांकन प्राप्त किया हो। मई 2022 तक, दुनिया भर में 47 कंपनियों ने डेकाकॉर्न का दर्जा हासिल कर लिया है।

आत्मनिर्भर भारत की प्रधानमंत्री मोदी की परिकल्पना के अनुरूप विकसित होता स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र *अमृतकाल* में आत्मनिर्भर और स्वसंधारणीय नए भारत को सुनिश्चित करेगा।

"मैं 'मन की बात' कार्यक्रम में मेरा और मेरे ग्रामीण कार्यों का उल्लेख करने के लिए हमारे माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ। यह एक बहुत बड़ा सम्मान है और अपना कार्य जारी रखने के लिए इससे मुझे बहुत प्रेरणा मिली है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद।"

- श्रीधर वेम्बू
पद्मश्री पुरस्कार विजेता
सीईओ, ज़ोहो कॉर्पोरेशन

भारत ने #100यूनिकॉर्न्स स्टार्ट-अप्स के साथ बनाया शतक

इंडस्ट्री लीडर्स की प्रतिक्रियाएँ

"यह लगने लगा है कि अब हम केवल चल नहीं रहे हैं, बल्कि भारत को दुनिया का सबसे बड़ा उद्यमशील इकोसिस्टम बनाने की ओर तेज़ी से बढ़ रहे हैं। स्टार्ट-अप इंडिया की शुरुआत 2016 में माननीय प्रधानमंत्री मोदी ने की थी, जिन्हें मैं हमेशा स्टार्ट-अप प्रधानमंत्री मानता हूँ।"
रितेश अग्रवाल (संस्थापक और समूह सीईओ, ओयो)

"100 यूनिकॉर्न की इस अद्भुत उपलब्धि पर मैं भारत और सभी भारतीय स्टार्ट अप संस्थापकों को बधाई देना चाहती हूँ। मैं हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी और सभी सरकारी विभागों को उनकी निरंतर मदद, समर्थन और नीतियों के लिए धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने स्टार्ट-अप्स को उभरने और भारत को दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट-अप इकोसिस्टम बनने के सक्षम बनाया है।"
उपासना टाकू (चेयरपर्सन और सह-संस्थापक, मोबिक्विक)

"भारत में अब 100 यूनिकॉर्न हैं! बिज़नेस शुरू करने के लिए भारत से बेहतर कोई जगह नहीं है और आंत्रप्रेन्योर बनने के लिए अब से बेहतर कोई समय नहीं हो सकता। मैं माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को एक विशेष और विनम्र धन्यवाद देना चाहता हूँ, और भारत को वैश्विक डिसरप्टर्स की बड़ी लीग में शामिल करने के लिए उन्हें बधाई देता हूं।"
बायजू रवींद्रन (सह-संस्थापक, बायजूज़)

"भारत में 100वां यूनिकॉर्न उभर के आया! यह भारत के युवा इकोसिस्टम के लिए कितनी अद्भुत उपलब्धि है! हम भारत सरकार और माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का आभार व्यक्त करना चाहते हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत सरकार, स्टार्ट-अप इंडिया और अन्य भागीदारों ने जितना काम किया है, उसने इस क्रांति को पंख दिए हैं।"
हरसिमरबीर सिंह (सह-संस्थापक, प्रिस्टीन केयर)

""यह जश्न मनाने का समय है! भारत में अब 100 यूनिकॉर्न हैं ! भारत को पहले 50 यूनिकॉर्न तक पहुँचने में जहाँ 8 साल लगे, वहीं अगले 50 तक पहुँचने में केवल 2 साल लगे। इसे कहते हैं विकास ! अगला दशक भारत और भारतीय स्टार्ट-अप इकोसिस्टम का है। आइए इसी तरह अपने देश की अर्थव्यवस्था और गौरव का निर्माण और संचालन करते रहें।"
ग़ज़ल अलघ (सह-संस्थापक, मामाअर्थ)

स्टार्ट-अप की सफलता में पथ प्रदर्शकों की भूमिका

संजीव बिखचंदानी
संस्थापक, नौकरी.कॉम

उद्यमी ही किसी कम्पनी का निर्माण करते हैं। वह अपने जीवन और कॅरियर से जुड़े ख़तरे उठाकर अपने विचारों को मूर्त रूप देने का काम करते हैं। चुनौती लेने, नवोन्मेष, टीम गठन, ग्राहकों को आकर्षित करना, जुनून तथा ऊर्जा के साथ संगठन को आगे बढ़ाना और व्यवसाय में वृद्धि करने का काम उन्हीं की मेहनत से सम्पन्न होता है। वह यह सब सम्भव कर दिखाते हैं। अक्सर वह शून्य से काफ़ी कुछ निर्मित करने में सफलता प्राप्त करते हैं।

उद्यमियों के बिना कार्य सम्भव नहीं होते। लगभग प्रत्येक मानवीय प्रयास में उद्यमियों और उद्यमशीलता की ज़रूरत पड़ती है।

इसके बावजूद, एक अच्छा परामर्शदाता, उद्यमी की यात्रा में काफी मददगार साबित होता है और उसकी यात्रा को तेज़, आसान और कम जोखिम भरा बनाने में मदद करता है। प्रश्न है कि किस तरह का व्यक्ति अच्छा पथ प्रदर्शक साबित होता है? आमतौर पर एक उम्रदराज़, अधिक अनुभवी व्यक्ति जो पहले भी उसी राह पर यात्रा कर चुका हो और उद्यमी के लिए सभी अप्रत्याशित एवं असामान्य वस्तुओं के आगे ढाल की तरह खड़ा हो। ऐसा कार्य जिसे करने में उद्यमी के पास अल्प या कुछ अनुभव नहीं है, ऐसी जानी-

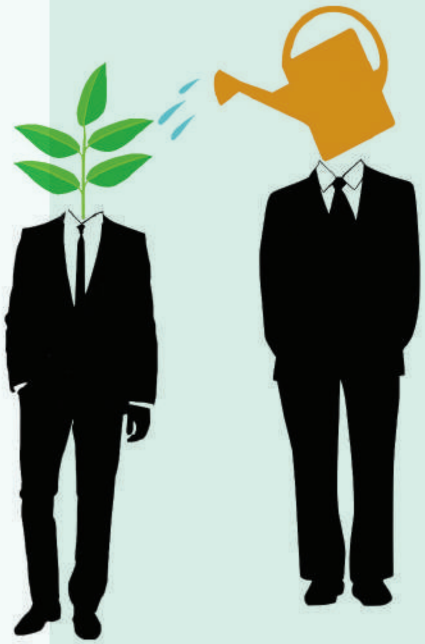

अनजानी समस्याओं से निपटने के लिए उद्यमी परामर्शदाता पर निर्भर हो सकता है। उदाहरण के लिए, बोर्ड का गठन, निवेशकों का प्रबंधन, प्रत्याशित ग्राहकों से संबंध साधना, सरकार और नियामकों से विमर्श, कानूनी मुद्दे और ऐसे अन्य बेहिसाब कार्य जिनमें उद्यमी को पथ प्रदर्शक की ज़रूरत पड़ती है।

वहीं, समूची ठोस मदद से बढ़कर पथ प्रदर्शक द्वारा उद्यमी को दी गई भावनात्मक मदद कहीं अधिक मूल्यवान होती है। उद्यमशीलता की राह पर स्वयं अकेले ही चलना पड़ता है। इसलिए ऐसा व्यक्ति जो खुद कभी उद्यमी रहा हो, अन्य युवा उद्यमी के डरों, अनिश्चितता और झिझक को ठीक से समझ सकता है। लिहाज़ा, पहले काम कर चुका और खतरे उठा चुका व्यक्ति ही युवा संस्थापक के इम्तिहानों और पीड़ाओं को समझ सकता है। और इन्हीं कमज़ोर लम्हों में युवा उद्यमी के लिए हौसलानुमा मनोवैज्ञानिक सहयोग उसका सम्बल बनता है। यही कारण है कि युवा उद्यमी और उसके पथ प्रदर्शक के बीच अंतर्संबंध सबसे अधिक ज़रूरी होते हैं।

भारत में युवा उद्यमियों को उत्कृष्ट कार्य करने और नए उद्यमियों की तलाश का कार्य कर रहे पथ प्रदर्शक संगठनों के हम बेहद आभारी हैं। कम्पनी की सफलता का पूरा श्रेय उद्यमी को दिया जाता है, परंतु निष्ठावान परामर्शदाताओं की भूमिका की भी प्रशंसा की जानी चाहिए।

स्टार्ट-अप के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय गुरू-शिष्य परम्परा फल-फूल रही है और आने वाले वर्षों और दशकों में भारतीय स्टार्ट-अप आंदोलन प्रोत्साहित करती रहेगी।

उद्यमियों को बढ़ावा देते पथ प्रदर्शक क्या कहते हैं, जानने के लिए QR code स्कैन करें

नवाचार और सीखने की संस्कृति पर निर्भर करता है स्टार्ट-अप: फ़ाल्गुनी नायर

फ़ाल्गुनी नायर ने 2012 में Nykaa की स्थापना की और आज यह भारत के प्रमुख ब्यूटी रिटेलर के रूप में उभरा है जो भारत में सौंदर्य बाजार को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हमारी दूरदर्शन टीम ने स्टार्ट-अप्स के लिए मेंटरशिप पर उनके विचार जानने के लिए उनसे बात की।

"स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र नवाचार और सीखने की संस्कृति पर बहुत अधिक निर्भर करता है, और पथ प्रदर्शन एक संगठन और उस उद्योग को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारत पिछले कुछ वर्षों में इस मिश्रित प्रभाव को देख रहा है, जिसमें अनगिनत नए स्टार्ट-अप्स का जन्म हुआ है, जो पिछले दशक में पारिस्थितिकी तंत्र में विकास से प्रेरित है।

एक पथ प्रदर्शक उभरते इंडस्ट्री लीडर्स और पूरे संगठन की सामूहिक संस्कृति के लिए उच्च मानक स्थापित करते हुए, दृढ़ता और लंबे तथा विविध अनुभवों से निर्मित व्यक्तिगत मूल्यों को प्रदर्शित करता है। मेंटरशिप का एक कंपनी पर गुणक प्रभाव हो सकता है और सामान्य रूप से कॉर्पोरेट नवाचार के लिए उत्प्रेरक हो सकता है, बाहरी और आंतरिक विचार नेतृत्व को एक साथ एकीकृत कर सकता है और इस तरह भविष्य के नए पथ प्रदर्शकों को विकसित कर सकता है जो अपने स्वयं के लीडरशिप नेटवर्क को और विकसित कर सकते हैं, और भी बड़े परिदृश्य को प्रभावित कर सकते हैं।

एक मेंटर और मेंटी के रूप में मेरे अपने अनुभवों ने मेरे कॉर्पोरेट करियर को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और इसके बाद एक उद्यमी के रूप में नायका के निर्माण में भी इनका योगदान रहा है। सही मेंटरशिप की इस विरासत ने नायका के मूल्यों और संस्कृति को एक संगठन के रूप में आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें उत्तम होने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। साथ ही समावेशिता की संस्कृति, कॉर्पोरेट प्रशासन और टिकाऊ व्यापार संचालन को भी बढ़ावा दिया है। इसके अलावा, हम सक्रिय रूप से उद्यमियों को आंतरिक रूप से सलाह देते हैं और विकसित करते हैं क्योंकि हम नायका के पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर अपने उपभोक्ता ब्रांडों का अधिग्रहण और निर्माण करते हैं, न केवल उन्हें तकनीकी ज्ञान और सही उपकरणों के साथ सशक्त बनाने के मामले में, बल्कि उन मूल्यों पर भी ज़ोर दिया जाता है जो लीडरशिप को सही आकार देते हैं।"

बूटस्ट्रैप स्टार्ट-अप से यूनिकॉर्न बना 'ज़ेरोधा'

*भारत के तेज़ी से बढ़ते स्टार्ट-अप इकोसिस्टम में से एक फ़िनटेक स्टार्टअप है ज़ेरोधा, जिसे वर्ष 2010 में **नितिन कामथ** और **निखिल कामथ** ने शुरू किया था, वह भी बिना किसी बाहरी निवेश के। स्टॉक ब्रोकिंग और ट्रेडिंग कम्पनी ज़ेरोधा आज तकनीक की मदद से सफलता की ऊँचाइयों को छू रही है और अन्य उद्यमियों को भी सशक्त बनने में सहायता कर रही है। दूरदर्शन की हमारी टीम ने ज़ेरोधा के फाउंडर और सीईओ श्री नितिन कामथ से इस बारे में बात की।*

नितिन कामथ का मानना है कि पिछले 2-3 वर्षों में अधिकांश व्यवसायों ने तीव्रता से डिजिटल टेक्नोलॉजी को अपनाया है जिससे व्यापर में काफ़ी वृद्धि हुई है। स्टार्ट-अप इकोसिस्टम में आज अत्यधिक लिक्विडिटी है।

साथ ही, भारत विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्रों में से एक है, जहाँ 20-30 वर्ष के युवाओं की अधिकतम जनसंख्या है। ऐसे में, भारत व्यापार और निवेश के लिए एक उचित स्थान है। "इंडिया स्टैक अनेक यूनिकॉर्न्स के लिए वास्तव में एक बहुत बड़ा प्रेरक रहा है। केवाईसी के लिए आधार, भुगतान के लिए यूपीआई, आईपीओ, इत्यादि काफी सहायक रहे हैं। साथ ही, देश में नियामक भी काफ़ी तेज़ी से नई दुनिया को अपना रहे हैं," श्री कामथ ने उत्साहपूर्वक बताया। श्री नितिन कामथ का मानना है कि आज का युवा जोखिम लेने के लिए तैयार है। यह एक सकारात्मक संकेत है। वह कहते हैं, "देश को आगे बढ़ने के लिए उद्यमियों की आवश्यकता है जो व्यापार खड़ा करें, धन बनाएँ और अपनी टीम व देश के साथ बाँटें। इससे देश का समावेशी विकास होगा।" स्टार्ट-अप के क्षेत्र में मिली प्रगति को बनाए रखने के विषय में बात करते हुए उन्होंने कहा कि कोर्स करेक्शन अनिवार्य है क्योंकि हर व्यवसाय को लाभदायक और टिकाऊ होना आवश्यक है।

ज़ेरोधा एक ऐसी कम्पनी है जिसे बिना किसी बाहरी निवेश के शुरू किया गया और आज यह एक यूनिकॉर्न है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा मेंटरशिप की बात पर चर्चा करते हुए उन्होंने अपनी 'रेनमैटेर' नामक संस्थान के विषय में बताया। "हमने तय किया है कि हम अपनी बनाई संपत्ति समाज को वापस दें। हम जलवायु परिवर्तन, आजीविका आदि के लिए काम कर रहे संस्थानों का समर्थन करते हैं।" ज़ेरोधा की सफलता की कहानी देश के हर युवा उद्यमी के लिए बहुत प्रेरणादायक है।

उद्यमिता के माध्यम से ग्रामीण भारत को बदलता '1ब्रिज'

"गांधीजी ने हमेशा कहा है कि असली भारत हमारे गाँवों में बसता है। यदि हम गाँव में ही एक स्थाई आर्थिक मॉडल बनाकर ग्रामीणों के जीवन में सुधार कर सकें, तो देश बहुत ही प्रगतिशील तरीके से विकसित होगा," यह कहना है **श्री मदन पड़ाकी** का, जो हज़ारों ग्रामीण उद्यमियों के नेटवर्क बनाने के लिए कार्यरत हैं ताकि गाँव एक आत्मनिर्भर और बढ़ती उद्यमिता का इको-सिस्टम बन सकें।

आज जब भारत 100 यूनिकॉर्न के लक्ष्य को छूने पर गर्वित है, ऐसे में ग्रामीण युवाओं को उद्यमी बनने और अपने गाँवों में पनपने के लिए सशक्त बनाने में 1ब्रिज जैसे संगठनों द्वारा किए जा रहे सराहनीय कार्यों को पहचानना अति आवश्यक है।

1ब्रिज एक ग्रामीण व्यापार नेटवर्क है जिसकी शुरुआत 2014 में हुई थी। यह ग्रामीण उद्यमियों की, प्रौद्योगिकी की मदद से, ग्रामीण नागरिकों को विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान करने में मदद करता है। यह युवा उद्यमी, जिन्हें 1ब्रिज सलाहकार कहा जाता है, गाँव में डिजिटल राजदूत के रूप में कार्य करते हैं। वे ग्रामीणों को मोबाइल रिचार्ज, बिल भुगतान, सीधे धन हस्तांतरण, बीमा खरीदने आदि में मदद करते हैं। वे उन्हें शहर की यात्रा किए बिना, आकांक्षात्मक उत्पाद खरीदने में भी मदद करते हैं। और अंत में, वे यह सुनिश्चित करते हैं कि उत्पाद उनके दरवाज़े तक पहुँचे। उद्यमी अपने द्वारा बेचे जाने वाले उत्पादों और प्रदान की जाने वाली सेवाओं से नियमित रूप से आय अर्जित करते हैं। आज, 1ब्रिज छह राज्यों के 75 से अधिक ज़िलों में मौजूद है और 9000 से अधिक उद्यमी इसके नेटवर्क में शामिल हैं। अकेले पिछले साल ही 1ब्रिज ने इन 75 जिलों में अपने सभी गाँवों में लगभग 22 मिलियन से अधिक का लेन-देन किया।

श्री पड़ाकी ने 'मन की बात' सम्बोधन में 1ब्रिज के प्रयासों को मान्यता देने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि 1ब्रिज को राष्ट्रीय स्टार्ट-अप पुरस्कार 2022 में विजेता के रूप में भी चुना गया। डीपीआईआईटी द्वारा मिले इस सम्मान ने उन्हें लोकप्रिय होने में मदद की।

श्री पड़ाकी दो दशकों से अधिक समय से युवाओं के साथ काम कर रहे हैं। वर्ष 2000 में उन्होंने दो अन्य सह-संस्थापकों के साथ मिलकर 'मेरिटट्रैक' नामक भारत की पहली कौशल मूल्यांकन इकाई शुरू की। 2011 में, उन्होंने 'हेड हेल्ड हाई फाउंडेशन' नामक एक फाउंडेशन शुरू किया, जहां गाँव के अशिक्षित युवाओं को अंग्रेजी बोलने वाले व कंप्यूटर साक्षर पेशेवरों में बदला जाता है। उनका दृढ़ विश्वास है कि गाँव के युवाओं में अप्रयुक्त क्षमता है, लेकिन अवसरों के अभाव में वे शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं। इसने उन्हें एक स्थाई, स्केलेबल प्रौद्योगिकी मंच बनाने के लिए प्रेरित किया जो युवाओं की उद्यमशीलता क्षमता को उजागर करे और वे अपने ग्रामीण समुदायों की सेवा कर सकें।

वह मानते हैं कि ग्रामीणों की आकाँक्षाओं, उनकी प्रतिभा और उद्यमशीलता की ऊर्जा को यदि प्रौद्योगिकी की शक्ति के साथ जोड़ दिया जाए, तो एक नई ग्रामीण व्यवस्था का निर्माण हो सकता है। वह इस नई ग्रामीण व्यवस्था को 'रुबन' कहते हैं। "मेरा सपना है कि हमारे देश के 700 कस्बों और गाँवों में से प्रत्येक गाँव, रुबनोमिक्स मॉडल पर विकसित हो, जहाँ हर युवा सशक्त हो, प्रत्येक युवा को एक उद्यमी के रूप में अभूतपूर्व आय अर्जित करने का अवसर मिले, और प्रत्येक युवा एक परिवर्तन निर्माता बने जो गाँव समुदाय को नई तकनीकों को अपनाने, नई कृषि पद्धतियों को अपनाने, उनकी घरेलू आय का बेहतर वित्तीय प्रबंधन करने, और अपने बच्चों व परिवारों के लिए सर्वोत्तम उत्पाद और सेवाएँ प्राप्त करने में उनकी मदद करने का प्रयास करे," उन्होंने व्यक्त किया।

श्री मदन पड़ाकी की यह पहल और गाँव के युवाओं को सफल उद्यमी बनाने के लिए समर्पित प्रयास मेंटरशिप का एक सच्चा उदाहरण है।

दिव्यांग युवाओं की वास्तविक क्षमता को उजागर करतीं- मीरा शेनॉय

हर देश की ताकत उसकी युवा शक्ति में निहित है। वे देश को एक प्रगतिशील और विकसित राष्ट्र बनाने की क्षमता रखते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में उद्यमिता में मेंटरशिप के महत्व पर ज़ोर दिया। ऐसी ही एक मेंटर हैं, यूथ4जॉब्स की संस्थापक-सीईओ, मीरा शेनॉयजी जो दिव्यांग युवाओं के उत्थान के लिए शानदार काम कर रही हैं।

मीरा शेनॉय ने यूथ4जॉब्स की स्थापना की। यह एक 185 लोगों की उत्साही टीम है जो कि दिव्यांग युवाओं को शिक्षा और रोज़गार संबंधित कौशल का प्रशिक्षण दे उन्हें नौकरी पाने में मदद करती है। उनके प्रयासों ने बड़ी संख्या में दिव्यांगजनों को स्वयं कमाकर एक सम्मानजनक जीवन जीने में मदद की है। अपने काम के बारे में बताते हुए, मीराजी ने कहा, “मैंने दिव्यांग युवाओं के साथ काम करने का फैसला इसलिए किया क्योंकि दुनिया की 80% दिव्यांग आबादी भारत जैसे विकासशील देशों में है। उनमें से अधिकांश गरीब हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य की कमी के कारण वे वर्षों तक गरीबी के चक्र में रहते हैं। इसलिए, मैंने सोचा कि अगर मैं इन युवाओं के साथ काम करूँ और कौशल के माध्यम से उनके जीवन को बदल उन्हें नौकरी दिलाने में मदद कर सकूँ, तो यह बहुत अच्छा होगा।”

यूथ4जॉब्स ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित करता है और उन्हें अच्छी कंपनियों में प्रवेश स्तर की नौकरियाँ प्रदान करता है। आज, वे लगभग 1100 कंपनियों के साथ काम करते हैं। इन कंपनियों को शिक्षित युवा उपलब्ध कराने के लिए, उन्होंने अपना कॉलेज कार्यक्रम शुरू किया जिसमें वे कॉलेजों में जाकर दिव्यांग युवाओं की तलाश करते हैं और उन्हें प्रशिक्षित करते हैं। इसके अलावा, वे इन कंपनियों को दिव्यांगजनों के बारे में भी जागरूक करते हैं और उन्हें यह समझने में मदद करते हैं कि किस दिव्यांग युवा को क्या कार्य दिया जा सकता है।

"मुझे यह कहते हुए ख़ुशी हो रही है कि आज हम इस क्षेत्र में दक्षिण एशिया के सबसे बड़े संगठन हैं। यह युवा, जिन्हें हम प्रशिक्षण देते हैं और जो नौकरी करते हैं, वे अपने गाँव वापस जाते हैं। वे अपने पिता से, जो शायद एक सीमांत किसान हो, 200 गुना अधिक कमाते हैं। कई बार वे अपने गैर-दिव्यांग बहन और भाई से भी अधिक कमाते हैं। यह कार्य अत्यंत प्रेरक है। ख़ासकर माताएं हमें बहुत आशीर्वाद देती हैं,” उन्होंने गर्व से कहा।

यह वास्तव में प्रेरणादायक है कि कैसे यह संगठन उन दिव्यांग युवाओं को सशक्त बना रहा है जिनके पास अप्रयुक्त क्षमता है और उनके एवं उनके परिवारों के जीवन को बदल रहा है।

स्वयं सहायता समूह

आत्मनिर्भर भारत के लिए महिलाओं का सशक्तीकरण

“तंजावुर डॉल खूबसूरत होने के साथ-साथ महिला सशक्तीकरण की एक नई गाथा भी लिख रही है। तंजावुर में महिला स्वयं सहायता समूहों के स्टोर और कियोस्क भी खुल रहे हैं। इससे कई गरीब परिवारों की जिंदगी बदल गई है। ऐसे कियोस्क और स्टोर की मदद से महिलाएँ अब अपने उत्पाद सीधे ग्राहकों को बेच सकती हैं।”

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के सम्बोधन में)

“जब से प्रधानमंत्री जी ने हमारा ('मन की बात' में) उल्लेख किया है, तब से बाहर से लोग चीज़ें खरीदने के लिए हमारी तलाश में आ रहे हैं। इस राष्ट्रीय मान्यता ने हमें और अधिक प्रसिद्ध होने का अवसर दिया है। मैं सभी 22 स्वयं सहायता समूहों की ओर से धन्यवाद करना चाहती हूं।”

- बृंदा,
महिला एसएचजी सदस्य, तंजावुर

आज के युग में, महिलाओं की भूमिका में काफी बदलाव आया है और यह उचित भी है। राष्ट्रों में स्थिरता सुनिश्चित करने की बात हो या उनके विकास की—इतिहास में ऐसी अनेक महिलाएँ हैं जिनके योगदान को आज भी याद किया जाता है। अपने देश की बात करें, तो भारत में कई प्रेरक महिलाएँ रही हैं जिन्होंने आम जन का नेतृत्व किया और साथ ही अन्य महिलाओं का मार्गदर्शन भी किया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ठीक ही कहा है- “यदि हमारी आबादी का 50 प्रतिशत, महिला होने के कारण घरों में बंद हैं तो हम सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं।” समाज में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। सरकार का प्रमुख जोर वित्तीय सहायता, कौशल और प्रशिक्षण के माध्यम से महिला उद्यमियों को बढ़ावा देना रहा है। जैसे-जैसे भारत एक प्रमुख वैश्विक आर्थिक शक्ति बन रहा है, देश की विकास गाथा में महिलाओं की भागीदारी दिन-प्रतिदिन विशिष्ट होती जा रही है।

प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में बताया कि कैसे उन्हें तमिलनाडु के तंजावुर के एक स्वयं सहायता समूह से एक दिलचस्प उपहार मिला था। यह एक विशेष तंजावुर गुड़िया थी, जिसमें भौगोलिक सूचकांक (जी. आई.) टैग भी है। उन्होंने कहा, “इस उपहार में भारतीयता की सुगंध और मातृ-शक्ति का आशीर्वाद है - मेरे लिए उनके स्नेह की

एक झलक है। दोस्तो, यह तंजावुर गुड़िया जितनी खूबसूरत है उतनी खूबसूरती से यह महिला सशक्तीकरण की नई गाथा भी लिख रही है।”

भारत का एसएचजी आंदोलन, छोटी बचत और ऋण समूहों से विकसित होकर दुनिया के सबसे बड़े संस्थागत मंचों में से एक बन गया है, जो गरीब ग्रामीण महिलाओं को

सशक्त बना रहा है। स्वयं सहायता समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि ये ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं जिससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैं और परिवार में योगदान करने में भी सक्षम होती हैं। इसके अलावा, ये समूह ग्रामीण महिलाओं को संगठित करने और एक-दूसरे को सशक्त बनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इनकी मदद से आज महिलाएँ अपने समुदायों के समग्र विकास की वाहक बन रही हैं।

महिला स्वयं सहायता समूह कई प्रकार से आत्मनिर्भर भारत अभियान के चैंपियन हैं। ये समूह न केवल महिलाओं को

आर्थिक रूप से सशक्त बना रहे हैं बल्कि उन्हें सामाजिक और राष्ट्रीय विकास में अग्रणी की भूमिका भी प्रदान कर रहे हैं। जब देश कोविड-19 महामारी की चपेट में था, तब महिला स्वयं सहायता समूह इस असाधारण चुनौती से निपटने के लिए आगे आए। चाहे मास्क बनाना हो, सैनिटाइजर बनाना हो, जरूरतमंदों को भोजन मुहैया कराना हो या जागरूकता फैलानी हो- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर राष्ट्र के सपने में इन समूहों का अनूठा योगदान एक बड़ी प्रेरणा साबित हुआ।

सरकार ने उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण, आर्थिक सहायता और प्रगति के अवसर प्रदान करने के लिए कई महत्वपूर्ण पहल की हैं। दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) ग्रामीण गरीब महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में संगठित करता है जो उन्हें आवाज़, स्थान और संसाधन प्रदान करता है।

समूहों के सदस्यों के लिए, स्वयं सहायता समूह प्रबंधन पर नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जो बाजारों, वित्तीय साक्षरता और आजीविका संबंधी प्रौद्योगिकियों के बारे में होते हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों और उनके समुदाय की ऋण संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार की निधियां

> "प्रधानमंत्रीजी द्वारा की गई प्रशंसा हमारे लिए खुशी की बात है। यह सभी स्वयं सहायता समूहों की जीत है। मैं इसके सभी सदस्यों की ओर से अपना धन्यवाद व्यक्त करना चाहती हूँ।"
>
> **– मणिमेकलाई,**
> महिला एसएचजी सदस्य, तंजावुर

भी प्रदान करता है। लक्षित परिवारों को कृषि और गैर-कृषि दोनों क्षेत्रों में आय सृजन गतिविधियाँ शुरू करने के लिए क्षमता निर्माण और तकनीकी सहायता भी प्रदान की जाती है।

सरकार, दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अलावा, स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए अतिरिक्त वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है। मुद्रा योजना के अंतर्गत, प्रत्येक स्वयं सहायता समूह की एक महिला सदस्य को अपना व्यवसाय शुरू करने या बढ़ाने के लिए 1 लाख रुपये तक का ऋण दिया जाता है।

स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण महिलाओं को न केवल आजीविका खोजने में बल्कि उद्यमी बनने और अपना खुद का व्यवसाय चलाने में भी मदद की है। जैसे-जैसे देश में 'वोकल फॉर लोकल' को बढ़ावा मिल रहा है, स्वयं सहायता समूहों द्वारा उत्पादित उत्पादों की माँग हर साल बढ़ रही है। आज, ये समूह जीईएम (सरकारी ई-मार्केट) का लाभ उठा रहे हैं, जहाँ वे अपने उत्पादों को सीधे सरकारी संगठनों, मंत्रालयों और विभागों को बेचने में सक्षम हैं। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने अपने क्षेत्र के स्व-निर्मित उत्पादों की बिक्री/प्रदर्शन के लिए अपने हवाई अड्डों पर स्वयं सहायता समूह को स्थान आवंटित करने के लिए एवीएसएआर (क्षेत्र के कुशल कारीगरों

एसएचजी महिलाओं की सफलता की कहानियाँ

लक्ष्मी भँवरे, माँ लक्ष्मी महिला आजीविका एसएचजी (म.प्र.)

अपने गाँव की साथी महिला किसानों को सस्टेनेबल कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

उर्मिला लिंडा, रोशनी महिला समूह (झारखंड)

लाख़ की खेती को बढ़ावा देने के लिए महिला किसानों को प्रशिक्षित किया जिससे उनकी वित्तीय स्थिति में सुधार हुआ।

जी. वरलक्ष्मी, संगीथा एसएचजी (आंध्र प्रदेश)

पशु पालन, चारा उत्पादन को प्रोत्साहित किया और अपने गाँव में दूध उत्पादन बढ़ाने में मदद की।

रंजन कँवर, चावण्डा माता एसएचजी (राजस्थान)

बकरी पालन पर साथी एसएचजी सदस्यों को ऑन-फील्ड सहायता प्रदान की और उन्हें 2018 में जयपुर में आजीविका दिवस पर सम्मानित किया गया।

बिमला सिंह, शिव शंकर एसएचजी (छत्तीसगढ़)

एसएचजी के संस्थापकों में से एक, वह अब एक कृषि प्रशिक्षक के रूप में महिलाओं को खेती की लागत को कम करने और फसल की उपज बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

सरला, गायत्री महिला बचत समूह एसएचजी (महाराष्ट्र)

सब्ज़ी विपणन की चुनौतियों का सामना किया और अपने गाँव में जैविक खेती करने वाले किसानों की संख्या बढ़ाने में मदद की।

के लिए स्थान के रूप में हवाई अड्डा-अवसर) की पहल की है। जाहिर है, स्वयं सहायता समूह अपने उत्पादों के साथ देश के कोने-कोने में पहुँच रहे हैं।

राष्ट्रीय रूपांतरण का नेतृत्व करने में, महिलाओं की प्रगति वर्तमान सरकार की एक परिभाषित विशेषता रही है। अब फोकस महिला विकास से हटकर महिला नेतृत्व वाले विकास की ओर हो गया है। नारी शक्ति अब आर्थिक विकास के लिए सबसे बड़ी ज़रूरत है, जैसा कि प्रधानमंत्री कहते हैं, "महिलाओं के सशक्तीकरण के बिना मानवता की प्रगति अधूरी है।"

प्रधानमंत्री का आह्वान

मेरा 'मन की बात' के श्रोताओं से एक आग्रह है... आप, अपने क्षेत्र में ये पता लगाएँ कि कौन से महिला SHGs काम कर रहे हैं। उनके Products के बारे में भी आप जानकारी जुटाएँ और ज़्यादा-से-ज़्यादा इन उत्पादों को उपयोग में लाएँ। ऐसा करके, आप, Self Help Group की आय बढ़ाने में तो मदद करेंगे ही, 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' को भी गति देंगे।

तंजावुर की आत्मनिर्भर महिलाएँ

प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में तंजावुर के स्वयं सहायता समूह के बारे में बात की और एक विशेष उपहार–तंजावुर गुड़िया प्राप्त करने पर अपनी ख़ुशी व्यक्त की। तंजावुर के स्वयं सहायता समूहों ने मिलकर थरगईगल कइविनई पोरुत्तकल विरप्पनई अंगाड़ी नामक पहल की शुरुआत की है। दूरदर्शन की हमारी टीम ने इस पहल से जुड़ी महिलाओं से बात की।

तंजावुर के हस्तशिल्प के विक्रय की पहल महिला स्वयं सहायता समूह द्वारा तंजावुर में केंद्र सरकार की रुर्बन परियोजना के तहत पारम्परिक हस्तशिल्प को बढ़ावा देने और इसके सदस्यों की मदद करने के लिए की गई है। तंजावुर थरगई महिला हस्तशिल्प स्टोर, जहाँ तंजावुर महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा बनाए गए विभिन्न उत्पादों की बिक्री होती है, थरगईगल कइविनई पोरुत्तकल विरप्पनई अंगाड़ी पहल के तहत एक आउटलेट है। ख़ास बात यह है कि इस पहल से 22 एसएचजी जुड़े हुए हैं।

प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' में अपना ज़िक्र होने पर तंजावुर थरगई महिला हस्तशिल्प स्टोर चलाने वाले महिला एसएचजी बेहद खुश हैं। महिला एसएचजी में काम करने वाली **बृंदा** ने उन सभी स्वयं सहायता समूहों की ओर से प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया जो वर्तमान में इस पहल से जुड़े हुए हैं। "हालांकि हमारी पहल को शुरू हुए केवल तीन महीने हुए हैं, लेकिन हमारे परिचालन में काफी वृद्धि हुई है। कई अन्य स्वयं सहायता समूहों ने अपने उत्पादों को बेचने के लिए हमसे संपर्क किया है। जब से प्रधानमंत्री जी ने हमारा उल्लेख किया है, बाहर से लोग चीज़ें खरीदने के लिए हमारी तलाश में आ रहे हैं। हमने बड़ी मात्रा में बिक्री दर्ज की और हमारी आय बढ़ गई है।"

थरगईगल कइविनई पोरुत्तकल विरप्पनई अंगाड़ी पहल का प्राथमिक उद्देश्य इन महिलाओं को अपने उत्पाद सीधे ग्राहकों को बेचने में मदद करना था। महिला स्वयं सहायता समूहों के स्टोर अब तंजावुर में बहुत से प्रमुख स्थानों पर खुल गए हैं। शहर भर में फैले इन स्टोरों के साथ-साथ कियोस्क के रख-रखाव की पूरी ज़िम्मेदारी महिलाएँ खुद ले रही हैं। इस पहल से जुड़ी महिलाएँ इस बात से खुश हैं कि वे अब पूरे देश में जानी जाती हैं। वे जल्द ही तंजावुर रेलवे स्टेशन पर एक विक्रय केंद्र स्थापित करने की योजना बना रहीं हैं।

प्रधानमंत्री द्वारा उल्लेख की गई तंजावुर गुड़िया के अलावा, ये स्वयं सहायता

समूह खिलौने, कांस्य लैंप, चटाई, बैग और कृत्रिम आभूषण भी तैयार करते हैं। पहल के साथ काम कर रहीं एक अन्य एसएचजी सदस्य **मणिमेकलाई** ने बताया, "प्रधानमंत्री द्वारा ('मन की बात' में) हमारा उल्लेख करने के बाद हमारी बिक्री और आय बढ़ गई है। यह न केवल हमारे लिए बल्कि उन सभी के लिए भी एक अवसर है जो इन वस्तुओं का उत्पादन करते हैं ताकि अच्छी आय अर्जित कर सकें।" मणिमेकलाई ने भी प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया।

तंजावुर के इस एसएचजी के बारे में जानने के लिए QR code स्कैन करें

जी.आई. टैग क्या है?

भौगोलिक संकेत (जी.आई. टैग) का उपयोग भौगोलिक क्षेत्र को लक्षित करने के लिए किया जाता है जहां से एक उत्पाद उत्पन्न होता है, चाहे वह कृषि उत्पाद हो, प्राकृतिक या निर्मित उत्पाद। यह टैग उन गुणों या विशेषताओं के प्रति आश्वासन भी प्रदान करता है जो उस विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के लिए अपने आप में अद्वितीय माने जाते हैं।

- **आंध्र प्रदेश** – बन्दर लड्डू
- **अरुणाचल प्रदेश** – इदु मिश्मी टेक्सटाइल्स
- **असम** – मुगा सिल्क
- **बिहार** – ज़र्दालू आम
- **छत्तीसगढ़** – बस्तर ढोकरा
- **गोवा** – मोइरा केला

- **हिमाचल प्रदेश** – चम्बा रुमाल
- **झारखण्ड** – सोहराई खोवर पेंटिंग
- **कर्नाटक** – चन्नापटना खिलौने
- **केरल** – आरणमुला कन्नाडी
- **पंजाब** – फुलकारी
- **मध्य प्रदेश** – बाघ प्रिंट
- **महाराष्ट्र** – कोल्हापुरी चप्पल

- **मेघालय** – मेमांग नारंग
- **मिज़ोरम** – पॉन्डुम
- **नागालैंड** – नागालैंड खीरा
- **जम्मू और कश्मीर** – केसर
- **पुदुच्चेरी** – विल्लीअनुर टेराकोटा
- **राजस्थान** – ब्लू आर्ट पॉटरी
- **सिक्किम** – बड़ी काली इलायची
- **तेलंगाना** – सिल्वर फिलीग्री
- **पश्चिम बंगाल** – छऊ मुखौटा

- **ओडिशा** – एपलिक वर्क
- **तमिलनाडु** – मदुरई मल्ली
- **त्रिपुरा** – क्वीन पाइनएप्पल
- **उत्तराखंड** – ऐपण कला
- **उत्तर प्रदेश** – चिकन कढ़ाई
- **गुजरात** – कच्छ कढ़ाई
- **दिल्ली, हरियाणा** – बासमती चावल
- **मणिपुर** – सिराराखोंग हाथेई मिर्च

ग्रामीण महिलाओं का जीवन बदल रहे हैं एसएचजी
नए भारत में आत्मनिर्भरता की मिसाल चंदा बैरागी

स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाएँ आज विभिन्न योजनाओं का आगे बढ़कर लाभ उठा रही हैं—बैंक खाते खुलवाना हो या आयुष्मान कार्ड का लाभ लेना हो, गाँव में परम्परागत खेती को सुधारने के साथ ही कम लागत, आधुनिक जैविक कृषि एवं सूक्ष्म उद्यम को बढ़ावा दे रही हैं। घर-परिवार एवं समाज के महत्वपूर्ण निर्णयों में भी समूह सदस्यों की भागीदारी बढ़ रही है। समूह सदस्य अपने तथा अपने परिवार के स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा को सुधारने के लिए भी अच्छा प्रयासरत हैं। ऐसी ही एक कहानी है मध्य प्रदेश के गुना ज़िले की रहने वाली **श्रीमती चंदा बैरागी** की।

एक समय था जब चंदाजी की अपने गाँव में कोई पहचान नहीं थी। घर पर वाहन का न होने के कारण कृषि उत्पादन को बाज़ार तक नहीं भेज पातीं थीं जिससे उन्हें उत्पादन के अच्छे भाव नहीं मिल पाते थे और चंदाजी और उनका परिवार मज़दूरी से प्राप्त होने वाली अत्यंत कम आय पर आश्रित था। आर्थिक तंगी के कारण बच्चों की पढ़ाई में व्यवधान हो रहा था। बैंक के विषय में कोई जानकारी नहीं थी। आवश्यकता पड़ने पर साहूकार से ऊंची ब्याज दर पर कर्ज़ लेना पड़ता था।

मुस्कान स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद चंदाजी की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार आया। बैंक में आने-जाने से बैंकिंग सुविधाओं की जानकारी मिली। चंदाजी आजीविका मिशन में सीआरपी का काम करने लगीं, जिससे उनकी आय में भी वृद्धि हुई। साथ ही उन्होंने जीडीपी एवं सामाजिक अंकेक्षण का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आजीविका मिशन के माध्यम से बैंक सखी का प्रशिक्षण प्राप्त कर इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ बैंकिंग एंड फाइनेंस (IIBF) परीक्षा उत्तीर्ण कर मध्यांचल ग्रामीण बैंक में बैंक सखी का कार्य प्रारम्भ किया। आज

चंदाजी को समस्त ग्राम पंचायतों में पहचानी जाती हैं। यहाँ तक कि गाँव वाले चंदाजी के घर को उनके नाम से जानने लगे हैं।

अन्य ग्रामों में स्वयं सहायता समूह बनाने का कार्य हो या अपने ग्राम की सभी महिलाओं को ऐसे समूहों से जोड़ने का—चंदाजी ये सभी कार्य बखूबी निभा रही हैं। उन्होंने ग्रामों में किसानों को संगठित कर शिवोहम एफपीओ का गठन किया जिसमें किसानों द्वारा डायरेक्टर के रूप में चंदाजी को चुना गया।

चंदाजी का मानना है कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के पश्चात ग्राम की महिलाओं के जीवन में कई तरह के परिवर्तन आए हैं। "मैंने देखा है कि समूह से जुड़ने से पहले जो महिलाएँ घर से बाहर नहीं निकलती थीं, वे अब अपने काम करने के लिए विभिन्न कार्यालयों में, बैंकों में अकेली जाने लगी हैं। अब उनकी झिझक दूर हो गई तथा महिलाएँ जागरूक होकर आगे बढ़ रहीं हैं। विभिन्न प्रकार की आजीविका गतिविधियों से जुड़कर मज़दूर से मालिक बन रही हैं, स्वयं अतिरिक्त आय प्राप्त कर रही हैं और अपने परिवार को आर्थिक सहायता देने में सक्षम हो गई हैं।"

एक भारत श्रेष्ठ भारत

भारत की विविधता का उत्सव

"भारत कई भाषाओं, लिपियों और बोलियों का एक समृद्ध ख़ज़ाना है। अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न पोशाकें, खान-पान और संस्कृति हमारी पहचान हैं। एक राष्ट्र के रूप में यह विविधता हमें मज़बूत करती है और हमें एकजुट रखती है।"

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के सम्बोधन में)

"मैं माननीय प्रधानमंत्री मोदीजी का बहुत-बहुत धन्यवाद करना चाहती हूँ। उनके शब्दों से मेरे आत्मविश्वास को और बढ़ावा मिला है और प्रेरित किया है कि मैं अपनी आगे की पढ़ाई और बेहतर तरीके से करूँ।"

– कल्पना
छात्रा, देहरादून

विविध भाषाओं, धर्मों, संस्कृतियों और परम्पराओं वाले भारत देश ने हमेशा अपनी बहुलता को संजोया है- विविधता हमेशा भारत की विशिष्ट पहचान का एक अविभाज्य हिस्सा रही है। इतनी विविधताओं के बावजूद, राष्ट्र विविधता में एकता का प्रतीक बना हुआ है। एकता की यह भावना भाई-चारे की एक चिरस्थाई लौ के रूप में हमेशा कायम है, जो हममें से प्रत्येक के प्रयासों से पोषित होती है।

आज, जब देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, यह याद रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि वे हमारे महान स्वतंत्रता सेनानी ही थे जिन्होंने स्वतंत्र और संयुक्त भारत के लिए अपने सुदृढ़ दृष्टिकोण, निरंतर प्रयासों और अनगिनत संघर्षों के माध्यम से आज़ाद भारत की नींव रखी थी। उनके असंख्य और अनगिनत बलिदानों के कारण ही आज हम एक शांतिपूर्ण और प्रगतिशील जीवनशैली का आनंद ले रहे हैं और जीवन के हर क्षेत्र में अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने में सक्षम हैं। भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल एक ऐसे नेता थे जिनका एक भारत की नींव रखने में उल्लेखनीय योगदान रहा है। स्वतंत्रता के बाद उन्होंने भारत को एकजुट करने का महत्वपूर्ण कार्य किया और वे अखंड भारत के शिल्पकार बन गए।

"पटेल ने हमें *'एक भारत'* देने के लिए काम किया, अब इसे श्रेष्ठ भारत में बदलना हमारा कर्त्तव्य है" - इन पंक्तियों के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के लौह पुरुष की 140वीं जयंती (31 अक्टूबर, 2015) पर एक भारत श्रेष्ठ भारत का शुभारम्भ किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देना और भारत के नागरिकों के बीच भावनात्मक संबंधों के ताने-बाने को मज़बूत करना है। कार्यक्रम के शुभारम्भ के बाद से, भारत सरकार ने राज्य सरकारों के साथ-साथ राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों के बीच सांस्कृतिक और भाषाई आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहल की हैं, जैसे राज्यों की भागीदारी, राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताएँ और प्रश्नोत्तरी आदि।

भाषा, एक से दूसरी पीढ़ी और एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में संस्कृति के संचरण का माध्यम है। भारत, सांस्कृतिक रूप से विविध राष्ट्र होने के नाते, न केवल कई भाषाओं से संपन्न है, बल्कि यह सबसे प्राचीन भाषाओं में से कुछ की जन्मस्थली भी है।

कोस-कोस पर बदले पानी,
चार कोस पर बानी,
पर एक है जो नहीं बदलता
वह है हिंदुस्तानी

हर दो मील पर पानी का स्वाद बदल जाता है, हर चार मील में बोली बदल जाती है, लेकिन जो नहीं बदलते वे हैं हम भारतीय। यह प्रसिद्ध कहावत 'भारत की विविधता में एकता' को दर्शाती है। वास्तव में, 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 19,000 से अधिक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं।

इस तरह के विविध भाषाई परिदृश्य के साथ, भारत की भाषाओं को संरक्षित करने और बढ़ावा देने पर भारत सरकार पूरी तरह ध्यान केंद्रित कर रही है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि भारत की विभिन्न भाषाएँ भारतीयों को एक-दूसरे के करीब लाने का एक साधन बनें, भारत सरकार ने दिसंबर, 2021 में 'भाषा संगम ऐप' का शुभारम्भ किया।

भारत सरकार जहाँ देश की विभिन्न भाषाओं को सम्मान देने के लिए *एक भारत श्रेष्ठ भारत* के तहत विभिन्न प्रयास कर रही है, वहीं नागरिक भी भाषाई विविधता को मज़बूत करने के लिए आगे आ रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 29 मई, 2022 को अपने 'मन

की बात' में पुरुलिया, पश्चिम बंगाल के प्रोफ़ेसर **श्री श्रीपति टुडू** का उल्लेख किया था। श्री टुडू ने संथाली समुदाय के लिए 'ओल चिकी' लिपि में भारत के संविधान का अनुवाद किया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने **कल्पना** के बारे में भी बात की जिनकी कहानी सभी के लिए प्रेरणादायक है। कल्पना ने कक्षा तीन में अपनी आँखों की रोशनी खो दी थी और वह क्षय रोग से पीड़ित थी। लेकिन ये बाधाएँ भी उन्हें कर्नाटक में दसवीं कक्षा की परीक्षा में सफल होने से रोक नहीं सकीं। आज उनकी मेहनत और लगन इस बात की मिसाल है कि *'जहाँ चाह है, वहाँ राह है'*।

कल्पना और श्रीपति टुडू प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए दूरदर्शी कार्यक्रम 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की प्रेरणा और सच्चे ब्रांड एंबेसडर हैं।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' देश को इसकी विविधता के गुणगान के साथ एकजुट करने की दिशा में एक कदम है। लोगों के प्रयासों से यह कार्यक्रम विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और समुदायों को करीब लाने में बहुत कारगर साबित हो रहा है और जो पहले कभी नहीं हुआ उसे सम्भव बना रहा है।

प्रधानमंत्री का आह्वान

एक भारत - श्रेष्ठ भारत की भावना को मज़बूत करने वाले ऐसे और प्रयासों के बारे में जानने के लिए कार्यक्रम की वेबसाइट देखें। यहाँ आपको विभिन्न विषयों जैसे खान-पान, कला, संस्कृति, पर्यटन आदि से संबंधित गतिविधियों के बारे में जानकारी मिलेगी। लोग इन गतिविधियों में भाग भी ले सकते हैं और अपने राष्ट्र तथा इसकी विविधता के बारे में अधिक जानकारी हासिल कर सकते हैं।

कल्पना – एक भारत श्रेष्ठ भारत की युवा चैंपियन

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना अब और मज़बूत हो रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' में कल्पना का वर्णन किया और कहा कि वे 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की जीवन्त उदाहरण हैं। दूरदर्शन की टीम ने कल्पना से उनके सफ़र के बारे में और जानने हेतु बात की।

कुछ महीनों पहले तक कल्पना को कन्नड़ भाषा ज़रा भी नहीं आती थी। जब वह तीसरी कक्षा में थीं, तब उन्होंने अपनी आँखों की रौशनी खो दी। लेकिन 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना से प्रेरित, उन्होंने मैसूरू की प्रोफ़ेसर तारामूर्ति से न सिर्फ कन्नड़ भाषा सीखी, बल्कि दसवीं की परीक्षा में कन्नड़ भाषा में 92 अंक भी प्राप्त किए।

कल्पना कहती हैं, "मैं तीसरी कक्षा में थी जब टी.बी. की वजह से मेरी आँखों की रौशनी चली गई। इससे मेरे लिए मुश्किलें बहुत बढ़ गई थीं। उस समय मैं देहरादून में पढ़ रही थी और विद्यालय में समायोजन करना मेरे लिए बहुत मुश्किल हो गया था। मैंने अपने दादाजी को अपनी दिक्कतों के बारे में बताया, जिसके बाद वे मुझे मैसूरू ले आए। यहाँ मैं प्रोफ़ेसर तारामूर्ति से मिली, जिनकी मदद से मेरा प्रवेश रंगराओ मेमोरियल स्कूल फॉर डिसेबल्ड में हुआ। उस समय मुझे कन्नड़ ज़रा भी नहीं आती थी। पर मेरे सहपाठियों, शिक्षकों और प्रोफ़ेसर तारामूर्ति ने भाषा सीखने में मेरी बहुत मदद की। वे सब मुझसे सिर्फ कन्नड़ में ही बात करते थे, जिससे मैं भाषा जल्दी सीख सकूँ। लेकिन तभी (कोविड-19) महामारी आ गई और विद्यालय में चल रही हमारी पढ़ाई रुक गई। तब प्रोफ़ेसर तारामूर्ति ने मुझे घर पर पढ़ना शुरू करने और सेकेंडरी स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट परीक्षा देने को प्रोत्साहित किया। मैंने सिर्फ तीन महीने में कन्नड़ सीखी और परीक्षा में 92 अंक लाकर पास हुई।"

कल्पना के सफ़र के बारे में जानने के लिए QR code scan करें

प्रोफ़ेसर श्रीपति टुडू : ओल चिकी लिपि में संविधान का अनुवाद

भारत के संविधान को दुनिया के सबसे विस्तृत संविधानों में से एक माना जाता है। प्रोफ़ेसर श्रीपति टुडू ने संथाली समुदाय के लोगों को उनकी ही अपनी भाषा में अनुवादित संविधान भेंट किया। दूरदर्शन टीम के साथ बातचीत में श्रीपति टुडू अपनी इस पहल के बारे में बताते हैं।

पुरुलिया, पश्चिम बंगाल में कार्यरत संथाली भाषा के प्रोफ़ेसर श्रीपति टुडू ने महसूस किया कि भारतीय भाषाओं में विविधता के कारण, बहुत से लोगों तक संविधान पहुँच नहीं पा रहा है, उन्होंने इसे अपनी मातृभाषा संथाली की ओल चिकी लिपि में अनुवाद करने का फैसला किया और 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम का हिस्सा बने।

श्रीपति टुडू कहते हैं, "मैंने केवल संविधान और इस तथ्य के बारे में सुना था कि हमारा देश इसके माध्यम से चलता है। लेकिन तब मुझे इसे पढ़ने का मौका नहीं मिला। बड़े होकर, जब मुझे इसे पढ़ने का अवसर मिला, तो मैंने महसूस किया कि प्रत्येक भारतीय के लिए संविधान को पढ़ना और समझना बहुत महत्वपूर्ण है। उस पल भारत के संविधान को अपनी मातृभाषा, संथाली में अनुवाद करने का विचार मेरे मन में आया। जब मैंने भारत के संविधान का संथाली संस्करण पूरा कर दिया, तो मैंने उसे संथाली समुदाय को उपहार की तरह दिया ताकि वे उस महान राष्ट्र के बारे में पढ़ और समझ सकें जिसे वे अपना घर कहते हैं और भारत के प्रति अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के बारे में अवगत हो सकें। आज मुझे यह देखकर खुशी हो रही है कि लोग संविधान के संथाली संस्करण की तलाश कर रहे हैं और इसे पढ़ रहे हैं। यह देखकर खुशी होती है कि मेरा काम जनता तक पहुँच रहा है और अपने उद्देश्य को पूरा कर रहा है।"

भारत की एकता और श्रेष्ठता के मूल तत्व

प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत
पूर्व निदेशक, एनसीईआरटी, और वर्तमान में यूनेस्को महात्मा गांधी शिक्षा संस्थान के गवर्निंग बोर्ड के अध्यक्ष

पिछले आठ वर्षों में भारत का मान-सम्मान सारे विश्व में बढ़ा है। प्रधानमंत्री की दूरदृष्टि, कर्मठता, लगनशीलता और संवेदनशीलता को व्यावहारिक स्वरूप देने वाली अनेक परियोजनाओं ने पंक्ति के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति के जीवन और उसकी गुणवत्ता में सकारात्मक परिवर्तन किया है। इस पर विहंगम दृष्टि डालने पर यह स्पष्ट दिखाई देता है कि भारतीय युवाओं के लिए अवसरों के क्षितिज का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। इसके परिणामस्वरूप युवाओं द्वारा अप्रत्याशित रूप से नवाचार हुए हैं, युवाओं ने स्वयं आगे बढ़कर रोज़गार के अवसर पैदा किए हैं। यह सब बहुत ही महत्वपूर्ण दृष्टिकोण परिवर्तन है जो युवाओं का आत्मविश्वास तेजी से बढ़ा रहा है। इस समय आवश्यकता है कि हर युवा 21 फरवरी 1929 के महात्मा गाँधी के इन विचारों से परिचित हो, "भारत की हर चीज़ मुझे आकर्षित करती है। सर्वोच्च आकांक्षाएँ रखनेवाले किसी व्यक्ति को अपने विकास के लिए जो कुछ चाहिए, वह सब उसे भारत में मिल सकता है।" यही प्रेरणा सम्भवतः इस समय साकार रूप ले रही है। इस देश में सदा स्वीकारा गया है कि जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य 'सर्व भूत हिते रतः' पर आधारित होना चाहिए। जब दक्षिण अफ्रीका में पीटर मारित्ज़बर्ग स्टेशन पर बैरिस्टर एम. के. गाँधी को टिकट होने के बावजूद बाहर फेंक दिया गया था, तब अत्यंत अपमानपूर्ण स्थिति में अकेले बैठे गाँधी ने सोचा कि अपने अपमान का बदला ले भी लिया तो क्या? उन्होंने अपने क्षितिज को विस्तृत कर दिया, रंगभेद को समूल नष्ट करने में अपने को पूरी तरह समर्पित कर दिया। प्रधानमंत्री जब 'मन की बात' करते हैं, तब उसमें हर बार ऐसे क्षितिज विस्तार की छवि निश्चित ही दिखाई देती है। अभी (89 एपिसोड) में उन्होंने एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना के तहत देश के विभिन्न प्रदेशों के लोगों के बीच बढ़ते हुए आपसी जुड़ाव के कई उदाहरण दिए हैं। साथ ही अंत में कहा कि अपना ध्यान रखिए, साथ ही साथ पशु-पक्षियों को दाना-पानी देने का मानवीय उत्तरदायित्व भी निभाइए। विविधता में एकता और दैव ऋण की यह परम्परागत समझ ही मेरे भारत को श्रेष्ठ भारत बनाती है। वह भारत ही है जहाँ प्रकृति को, पशु-पक्षियों, पेड़-पोधों, नदियों -पहाड़ों तक को देवत्व प्रदान किया गया है। इस के निहित मंतव्य को यदि विश्व स्वीकार करे तो जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जल-संकट जैसी समस्याएँ आज भी सुलझ सकती हैं। यहाँ दैव ऋण के साथ पितृ ऋण और ऋषि ऋण की संकल्पनाएँ मनुष्य को व्यक्ति से व्यक्तित्व में बदल देती हैं। मन की बात में यह तत्व हर बार उभरते हैं, क्योंकि नरेन्द्र मोदी ने अपने प्रारम्भिक वर्षों में देश के 400 से अधिक शहरों में रात्रि विश्राम किया है, भारत को और उसकी एकता तथा श्रेष्ठता को देखा है, पहचाना है, और उसे पुनः कैसे स्थापित किया जा सकता है, इसे समझा है। वे इसे ही साकार रूप दे रहे हैं।

भारत में वैचारिक स्वायत्ता वैदिक काल के पहले से विद्यमान थी, हर व्यक्ति को अपना पंथ, आस्था, पूजा पद्धति चुनने का अधिकार था, ईश्वर को मानने या न मानने की छूट थी। कुछ इस स्वायत्तता के फलस्वरूप और कुछ भौगोलिक-ऐतिहासिक कारणों की वजह से हमारे देश के हर प्रांत में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का, भाषाओं का, रहन-सहन, वेश-भूषा, कला साहित्य आदि का विकास हुआ है। इस विविधता के बावजूद कई ऐसी मान्यताएँ हैं जो हमें आपस में जोड़ती हैं, जैसे 'अतिथि देवो भव' की मान्यता हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक सर्वमान्य थीं। हर प्रकार की विविधता की स्वीकार्यता भारत की एकता का आधार रही है। और इसी आधार को मज़बूती प्रदान करने के लिए, देश के युवाओं को इन विविधताओं से परिचित कराने के लिए, इसे आत्मसात करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की यह मुहिम चलाई है। जब एक केरल का युवा असमिया बोली सीखता है, या एक गुजराती महिला अपनी बंगाली मित्र से लूची बनाना सीखकर अपने परिवारजनों के आगे परोसती है तो इससे एक भारत श्रेष्ठ भारत की धारणा को मज़बूती मिलती है। जो संस्कृति मनुष्य को ईश्वर का अंश– जीव अविनाशी स्वीकार करती हो, वहाँ कोई भेदभाव तो हो ही नहीं सकता, बल्कि यदि देश के लोग यहाँ की विविधता को ग्रहण करें और एक-दूसरे को बेहतर जानने-समझने लगें तो इससे देश को बहुत बल मिलेगा।

भारत के युवाओं के समक्ष अवसरों का खुला आकाश उपस्थित है। व्यवस्था और समाज उनके साथ खड़ा है। यही उनके पंख हैं, उन्होंने सफल उड़ानें भरी हैं, आगे भी भारत की एकता और श्रेष्ठता का प्रतीक तिरंगा आकाश में लहराना है।

तीर्थ-सेवा
स्वच्छता और अध्यात्म

“ मित्रो, यहां जितनी ज़रूरी तीर्थयात्रा है; उतनी ही महत्वपूर्ण ‘तीर्थ-सेवा’ है। मैं यह भी कहूंगा कि बिना ‘तीर्थ-सेवा’ के, तीरथ अधूरा रहता है। हम जहां भी जाएं, अपने तीर्थस्थलों की गरिमा बनाए रखें। शुद्धता, स्वच्छता और पवित्र वातावरण... हमें यह सब नहीं भूलना चाहिए और उसके लिए, यह ज़रूरी है कि हम स्वच्छता के प्रति संकल्प करें। ”

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“ ‘मन की बात’ सम्बोधन में मेरा ज़िक्र करने के लिए मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद देती हूं। जैसा कि उन्होंने कहा, उत्तराखंड को स्वच्छ और शुद्ध रखना स्थानीय लोगों की ही नहीं बल्कि श्रद्धालुओं की भी ज़िम्मेदारी है।”

– चम्पा देवी
देवार गाँव की स्वच्छता कार्यकर्ता

स्वच्छता की अवधारणा भारतीय परम्परा और संस्कृति का अभिन्न अंग है। प्राचीनतम् सिंधु घाटी सभ्यता की जल निकासी व्यवस्था से पता चलता है कि शुचिता और स्वच्छता भारतीय सभ्यता की आधारशिला है। सभ्यता की प्रगति के साथ-साथ स्वच्छता प्रत्येक परम्परा, पवित्र ग्रंथों और सांस्कृतिक अभ्यासों का केंद्रीय अंग बन गई। उदाहरण के लिए, भगवद्गीता में ‘शौचम’ और ‘स्वच्छता’ को महत्वपूर्ण धर्म माना गया है। जाहिर है, भारतीय उपमहाद्वीप के सभी पंथों में शुचिता और स्वच्छता का आधारभूत स्थान रहा है और हमारे पवित्र ग्रंथ आमजन को स्वच्छ जीवन एवं स्वच्छ विचार अपनाने को प्रेरित करते रहे हैं।

हम सब महात्मा गांधी के उस प्रसिद्ध कथन से परिचित हैं - ‘स्वच्छता ईश्वरत्व के निकट लाती है’। इसका अर्थ है– स्वच्छ रहना आध्यात्मिक परिशुद्धता या भलाई का प्रतीक है। स्वच्छता का अध्यात्म से अटूट संबंध है। चूंकि अपने आप को आध्यात्मिक प्रक्रिया का अंश बनाने के लिए सर्वप्रथम बाह्य और आंतरिक परिशुद्धता ज़रूरी है, इसीलिए हमें उपासना स्थल सबसे अधिक स्वच्छ नज़र आते हैं।

इन दिनों उत्तराखंड में ‘चार-धाम’ की तीर्थ यात्रा चल रही है। प्रतिदिन देश भर से हज़ारों श्रद्धालु दर्शनों के लिए जाते हैं। दिव्य हिमालय में यह तीर्थ यात्रा श्रद्धालुओं को अतुलनीय अवसर उपलब्ध कराती हैं, लेकिन कुछ लोग केदारनाथ जैसे तीर्थस्थलों में फैलाई गई गंदगी को देखकर बहुत दुःखी होते हैं। अपने ‘मन की बात’ सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने केदारनाथ तीर्थ के आस-पास मिलने वाली गंदगी से जुड़े श्रद्धालुओं के अनुभवों पर चिंता व्यक्त की है। उन्होंने नागरिकों से तीर्थ स्थलों को साफ़-सुथरा रखने की अपील की है। उन्होंने कहा, “...जितनी ज़रूरी तीर्थ यात्रा है, उतनी ही ज़रूरी तीर्थ सेवा है।”

यह पहली बार नहीं जब प्रधानमंत्री ने स्वच्छता के महत्व पर जोर दिया है। वह कई बार लोगों से गांधीजी के सपनों के स्वच्छ भारत को साकार करने को कह चुके हैं। शौचालय, सामुदायिक स्वच्छता तंत्र तथा ठोस एवं गीला कचरा प्रबंधन पर ध्यान देते हुए भारत सरकार ने 2 अक्तूबर 2014 को एक राष्ट्रीय अभियान के तहत ‘स्वच्छ भारत अभियान’ का शुभारम्भ किया था। साथ ही, सरकार ने साफ़-सफ़ाई के महत्व को व्यापक रूप

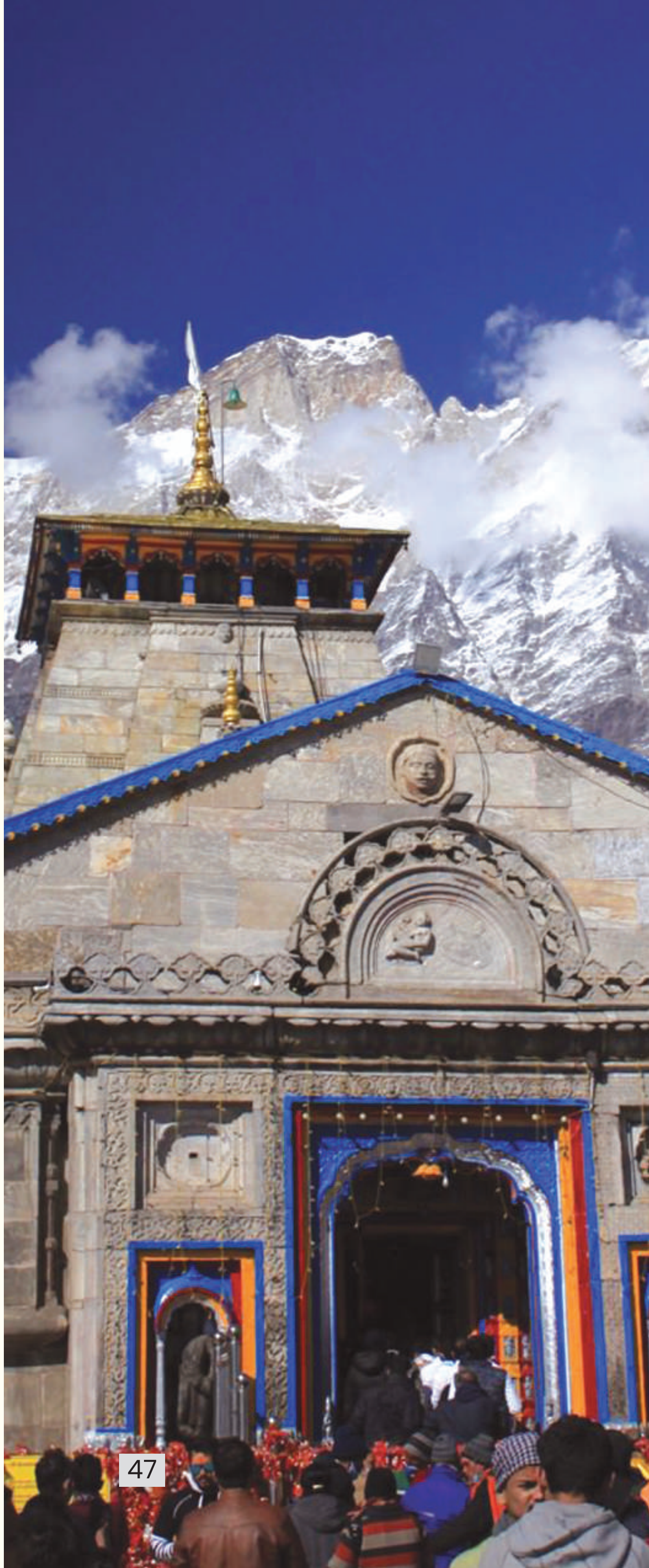

उत्तराखंड की चार धाम यात्रा

उत्तराखंड की चार धाम या छोटा चार धाम भारत की सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ यात्राओं में से एक है। यह यात्रा चार पवित्र स्थलों की यात्रा होती है जिनमें यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ शामिल हैं। प्रतिवर्ष करीब छह महीनों तक ऊँचाई पर स्थित यह चारों तीर्थस्थल बंद रहते हैं, और उसके बाद गर्मियों (अप्रैल या मई) से खुलकर सर्दियाँ (अक्तूबर या नवम्बर) शुरू होने तक खुले रहते हैं। चार धाम यात्रा जितनी दिव्य है उतनी ही दुर्गम भी है, परंतु यह आत्मा को तृप्त करती है। यमुना माता को समर्पित, यमुना नदी (गंगा नदी के बाद दूसरी सबसे पवित्र भारतीय नदी) के उद्गम स्थल के निकट एक तंग दर्रे में स्थित यमुनोत्री मंदिर उत्तरकाशी ज़िले में स्थित है। उत्तरकाशी में भारत की सबसे पवित्र नदी गंगा को समर्पित उनका उद्गम स्थल गंगोत्री भी स्थित है। रुद्रप्रयाग ज़िले में केदारनाथ स्थित है, जो भगवान शिव को समर्पित है, वहीं बद्रीनारायण मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। ऐसा माना जाता है कि चार धाम यात्रा को दक्षिणावर्त यानी घड़ी की सुई की दिशा में पूरा करना चाहिए। अतः यमुनोत्री से आरंभ की जाने वाली यह यात्रा यमुनोत्री से शुरू होकर, गंगोत्री, केदारनाथ और अंततः बद्रीनाथ पर समाप्त होती है।

केदारनाथ विकास कार्य का निरीक्षण करते प्रधानमंत्री

से प्रसारित भी किया है। इस अभियान के परिणामस्वरूप देश भर में नागरिकों ने स्वच्छता गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और अभियान को 'जन आंदोलन' का दर्जा दिलाया।

प्रधानमंत्री का मानना है कि स्वच्छता हमारी ज़िम्मेदारी ही नहीं, हमारा संस्कार है। और जब एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ये संस्कार पहुँचते हैं, स्वच्छता के लक्षण पूरे समाज में नज़र आते हैं। समाज में स्वच्छता के संस्कार कैसे गहराई तक पहुँच चुके हैं, इसका पता कई उदाहरणों से चलता है। स्वच्छता की साधना जारी रख कुछ लोग देवभूमि उत्तराखंड में यह दिव्य कार्य कर रहे हैं। इनमें रुद्रप्रयाग के श्रीमान **मनोज बैंजवाल** हैं जो पवित्र स्थलों को प्लास्टिक मुक्त रखने के कार्य में लगे हैं। गुप्तकाशी के **सुरेंद्र बगवाड़ी** भी हैं जो निरंतर स्वच्छता कार्यक्रम चलाते हैं। प्रधानमंत्री ने देवार गाँव की **चम्पा देवी** के बारे में भी बताया जो गाँव की महिलाओं को कचरा प्रबंधन के बारे में शिक्षित करती हैं और साथ ही पौधारोपण गतिविधियों में भी शामिल हैं, जिस कारण हरी-भरी वनपट्टी अस्तित्व में आई है।

भारत में विभिन्न धर्मों के तीर्थस्थल हैं जिस कारण देश और दुनिया से पर्यटक यहाँ आते हैं। सरकार ने धार्मिक पर्यटन को भारत के पर्यटन क्षेत्र का महत्वपूर्ण अंश मानते हुए अनेक योजनाएं शुरू की

> "यह मेरा सौभाग्य है कि प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' में मेरा ज़िक्र किया। इससे अपने राज्य और हमारे आस-पास के इलाकों को स्वच्छ रखने के लिए मुझे और मेरे साथियों को प्रोत्साहन मिला है।"
>
> **- मनोज बैंजवाल**
> रुद्रप्रयाग के स्वच्छता कार्यकर्ता

हैं और साथ ही, यह पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए और स्थानीय समुदायों के लिए रोज़गार अवसर उपलब्ध कराने के लिए सर्किट भी विकसित कर रही है। इन शुरुआतों से भारत के समृद्ध धरोहर स्थलों में सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ विश्वस्तरीय अवसंरचना ढाँचे का विकास किया जा सकेगा। इससे केवल तीर्थस्थलों की यात्रा ही आरामदेह नहीं होगी बल्कि दुनियाभर से पर्यटक आकर्षित होंगे और स्थानीय लोगों के लिए रोज़गार उपलब्ध होगा। इसलिए यह ज़रूरी है कि हम इन स्थानों पर साफ़-सफ़ाई रखने के हर सम्भव प्रयास करें।

'प्रशाद योजना' का लक्ष्य भारत में धार्मिक पर्यटन अनुभव को बढ़ावा देने के लिए तीर्थस्थलों की पहचान और उनका विकास करना है। योजना के अंतर्गत सम्पूर्ण धार्मिक पर्यटन अनुभव प्रदान करने के लिए तीर्थस्थलों को चिरस्थाई योजना बनाकर संघटित करने का लक्ष्य है। स्वदेश दर्शन योजना के तहत पंद्रह विषय-क्षेत्रों की पहचान की गई है। इनमें रामायण सर्किट, बुद्ध सर्किट, सूफ़ी सर्किट, आध्यात्मिक सर्किट, तीर्थंकर सर्किट, सिख सर्किट और क्रिश्चियन सर्किट प्रमुख हैं।

हम सबको इन तीर्थस्थलों की स्वच्छता और मर्यादा बनाए रखने के प्रति संकल्पबद्ध होना होगा। देश में अनेक लोग और स्वयंसेवी संस्थाएँ हैं जो अपने घर ही नहीं बल्कि अपने आस-पास के क्षेत्रों को साफ़ रखने का प्रयास कर रहे हैं, इसे देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति की ज़िम्मेदारी बनती है कि वह भारत को स्वच्छ रखने में योगदान करे। स्वच्छ भारत के लिए हमारा संयुक्त प्रयास सेवाभाव को प्रबल करेगा जो आध्यात्मिक उन्नति का पहला कदम होता है।

"मैंने मोदीजी के 'मन की बात' को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाया है। 'मन की बात' सम्बोधन में स्वच्छता अभियान से जुड़े मेरे कार्य के लिए मेरा नाम लेने पर मैं प्रधानमंत्री का आभारी हूं। मेरा मानना है कि यदि हम अपने गाँव स्वच्छ रखें, तो इससे पूरा देश स्वच्छ रहेगा।"

– सुरेंद्र बगवाडी
गुप्तकाशी के स्वच्छता कार्यकर्ता

साधना और संस्कार : उत्तराखंड के स्वच्छता कर्मी

'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने ऐसे लोगों का उल्लेख किया जो उत्तराखंड को साफ़ और हरित रखने के लिए कड़े प्रयास कर रहे हैं। दूरदर्शन की टीम ने उत्तराखंड के स्वच्छता कर्मियों से उनकी पहल पर बात की।

रुद्रप्रयाग के **मनोज बैंजवाल**, पिछले 25 वर्षों से अपने क्षेत्र में स्वच्छता अभियान चला रहे हैं। उन्होंने बताया, "मौजूदा समय में, सेवा इंटरनेशनल के सहयोग से मैं देवार, संकरी, भैन्सारी और गुप्तकाशी के चार गाँवों में स्वच्छता अभियान चला रहा हूँ।" बैंजवाल धार्मिक स्थलों को प्लास्टिक मुक्त रखने की दिशा में भी काम कर रहे हैं और वह सामुदायिक स्तर पर भी स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य करते हैं।

बैंजवाल ने बताया कि मैदान गढ़ी क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर डस्टबिन रखने के बावजूद, लोग लापरवाही से धार्मिक स्थलों के आस-पास कूड़ा फेंककर उन्हें गंदा करते हैं। उनके अनुसार, "मैंने अपने साथियों के साथ माताजी मंदिर की 3 किमी ट्रैक यात्रा के दौरान कूड़ा उठाने का फैसला किया था।"

उत्तराखंड के एक अन्य व्यक्ति जिन्होंने स्वच्छता को अपने जीवन का मंत्र बनाया है, वह हैं **सुरेंद्र बगवाडी**। गुप्तकाशी के रहने वाले बगवाडी ने अपने क्षेत्र को साफ़ रखने की ज़िम्मेदारी मिशन के तौर पर ली है। वह आम लोगों को शिक्षित करने के लिए नियमित स्वच्छता कार्यक्रम भी चलाते हैं। उनके कार्यक्रम का नाम 'मन की बात' है, जो अपने-आप में रोचक तथ्य है। वह कहते हैं, "अपने इलाके में मोदीजी के मिशन को सफल बनाना मेरी ज़िम्मेदारी है।"

इसी तरह, देवार गाँव की **चम्पा देवी**, अपने गाँव की महिलाओं को स्वच्छता और कचरा प्रबंधन के बारे में जागरुक करने के लिए पिछले तीन वर्षों से कड़ी मेहनत कर रही हैं। इतना ही नहीं, 1984 से चम्पा देवी अपने गाँव में पौधारोपण कर रही हैं और उन्होंने बंजर भूमि को सफलतापूर्वक वन में बदल दिया है। वह कहती हैं, "हर महीने हम स्वच्छता और पर्यावरण को लेकर बैठक करते हैं। पहले, विभिन्न स्थानों पर कूड़ा बिखरा रहता था। अब हमने एक हरा और खूबसूरत वनक्षेत्र बनाया है। हम जलस्रोतों को भी फिर से जीवित कर रहे हैं।" प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' में उनके कार्य की प्रशंसा पर चम्पा देवी धन्यवाद देती हैं और साथ ही, श्रद्धालुओं से विनती करती हैं कि वे धार्मिक स्थलों पर गंदगी ना फैलाएँ।

उत्तराखंड के स्वच्छाग्रहियों के बारे में जानने के लिए QR code scan करें

योग : विश्व एकता का स्तंभ

भारत का मानव जाति को अनुपम उपहार

“विश्व के टॉप बिजनेस पर्सन्स से लेकर फिल्म और स्पोर्ट्स पर्सनैलिटीज़ तक, स्टूडेंट्स से लेकर सामान्य मानव तक – सभी योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि दुनिया भर में योग की बढ़ती लोकप्रियता को देखकर आपको बहुत अच्छा लगता होगा।”

– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“यह बहुत गर्व की बात है कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने ‘मन की बात’ सम्बोधन में योग को हमारे जीवन का अभिन्न अंग बनाने की अपील की है। एक नरेन्द्र थे जिन्होंने दुनिया भर में योग का झंडा फहराया, और दुनिया उन्हें स्वामी विवेकानंद के नाम से जानती है। और आज हमारे साथ एक नरेन्द्र हैं जो ठीक वैसा ही कर रहे हैं, योग को बढ़ावा दे रहे हैं, हमारी संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं।”

– योगाचार्य प्रतिष्ठा जी

21 जून 2022 को जब दिन शुरू होगा और सूर्य की चमकीली किरणें आकाश को अरुणिम बना देंगी, पूरा विश्व एक अनूठे प्रयोग का साक्षी होगा। 8वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विश्व भर के लोग एक साथ इस धरती पर प्रकाश और जीवन के स्रोत - सूर्य के समक्ष योग का उत्सव मनाएँगे। ‘गार्जियन रिंग’ योग द्वारा सबको एकता के सूत्र में बाँधने की क्षमता का प्रतीक है और अपने जीवन को समृद्ध बनाने के लिए योग को अपनाने के प्रति लोगों को प्रेरित करने का प्रयास भी है। यह आयोजन जापान में प्रातः 6 बजे के स्थानीय समय से प्रारम्भ होगा और पश्चिम की ओर, जैसे-जैसे सूर्योदय होगा, यह कार्यक्रम जारी रहेगा। विश्व भर के 25 करोड़ से ज़्यादा लोगों की इस आयोजन में भाग लेने की आशा है।

योग शरीर और मन के बीच एक अटूट पुल का निर्माण करता है और इस तरह साधकों का भौतिक और आध्यात्मिक उत्थान करता है। आज योग देशों की सीमाओं से ऊपर उठ कर विश्व के हर कोने में पहुँच गया है और इस तरह, सही मायने में पूरे विश्व को जोड़ रहा है। योग की वैश्विकता नई बुलंदियाँ छू रही है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का विज़न योग की इस वैश्विक पहचान की प्रेरणा रहा है।

प्रधानमंत्री ने ‘मन की बात’ के अपने 89वें सम्बोधन में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की थीम– ‘मानवता के लिए योग’

का उल्लेख किया। आज जब पूरा विश्व कोविड महामारी के प्रकोप से उबर रहा है, यह बहुत आवश्यक है कि हम पूरी मानवता को ‘एक’ मानें तथा धर्म, नस्ल, विचारों और संस्कृति के आधार पर भेदभाव नहीं करें। कोविड-19 के दौर ने हमें अपने दैनिक जीवन में स्वास्थ्य के व्यापक महत्व को समझने को बाध्य किया है। ऐसे विकट समय में, योग लोगों का पथ-प्रदर्शक बना है। ज़्यादा से ज़्यादा संख्या में लोग स्वस्थ और स्फूर्ति से भरे बने रहने के लिए योग अपना रहे हैं।

आज़ादी के अमृत महोत्सव वर्ष में, आठवाँ विश्व योग दिवस भारत में ही नहीं, अपितु पूरे विश्व में आयोजित किया जा रहा है। स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, देश के 75 धरोहर-स्थलों पर कार्यक्रमों की पूरी तैयारी हो चुकी है। योग दिवस के अवसर पर देश-विदेश में होने वाले समारोहों में लाखों लोगों के भाग लेने की उम्मीद है।

प्रधानमंत्री ने अपने भाषणों में बार-बार स्वस्थ राष्ट्र के अपने विज़न का उल्लेख किया है। यह केवल देश में स्वास्थ्य-सेवाओं के विस्तार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए योग और आयुर्वेद जैसी रोग-रोधी पद्धतियों पर विशेष ध्यान देना भी शामिल है। ‘मन की बात’ के 89वें प्रसारण में प्रधानमंत्री ने लोगों से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोहों में शामिल होने का आह्वान किया। उन्होंने देशवासियों से योग को अपने दैनिक जीवन में अपनाने का भी आग्रह किया क्योंकि एक स्वस्थ व्यक्ति से स्वस्थ परिवार, और अंततः स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। यही नए भारत, स्वस्थ भारत और फिट भारत के निर्माण का मंत्र है।

प्रधानमंत्री का आह्वान

“मैं चाहूँगा कि आप भी अपने यहाँ अभी से ‘योग दिवस’ की तैयारियाँ शुरू कर दीजिए। ज़्यादा से ज़्यादा लोगों से मिलिए, हर किसी को योग दिवस के कार्यक्रम में जुड़ने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी योग दिवस में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे। साथ ही, योग को अपने जीवन में भी अपनाएँगे।”

मानसिक और शारीरिक ऊर्जा की जादुई शक्ति है योग – मीराबाई चानू

"योग और शक्तिवर्धक प्रशिक्षण पीनट बटर (मूँगफली से बने मक्खन) और जेली जैसे हैं। एक की कमी होती है, तो दूसरा नज़र आता है। दोनों का अपना महत्व है लेकिन अगर दोनों मिल जाएँ तो पूरी तरह संतुलित खुराक बन जाती है और दोगुना लाभ मिलता है।"

ओलंपिक रजत पदक विजेता मीराबाई चानू कुछ इस तरह बताती हैं कि कैसे योग की प्राचीन साधना ने उन्हें ऊर्जा दी है और और खेल में उनके प्रदर्शन को बेहतर बनाया है।

'विश्रांति' (रिलैक्सेशन) और 'आंतरिक शक्ति' – जब भी मैं 'योग' शब्द को सुनती हूँ, मेरे मन में यही दो शब्द आते हैं। लेकिन मैं अपने वेटलिफ्टिंग (भारोत्तोलन) अभ्यास के शुरू के दिनों में योग के जादुई लाभों से परिचित नहीं थी। 2014 में, जब मैं ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों के लिए तैयारी कर रही थी तो मैंने देखा कि मेरे वरिष्ठ खिलाड़ी योग कर रहे थे। उन्होंने मुझे बताया कि योग का अभ्यास कैसे हममें जबर्दस्त बदलाव ले आता है। तब से अब तक, मेरा दिन *सूर्य नमस्कार* और योग के श्वास-प्रश्वास से जुड़े अभ्यासों से ही शुरू होता है।

योग तथा शक्तिवर्धक प्रशिक्षण के लाभ

योग से जो तनाव-मुक्ति और लचीलापन मिलता है, वह मांस-पेशियों को मज़बूत बनाने के शक्तिवर्धक प्रशिक्षण का पूरक है। यह एक संतुलित अभ्यास है जो आपके शरीर, मन और चेतना पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। अगर आप केवल ज़्यादा वज़न उठाते हैं तो आपकी शक्ति बढ़ती है। लेकिन केवल यही करने से आपके शरीर के लचीलेपन पर बुरा असर पड़ सकता है। लेकिन जब आप अपने नियमित अभ्यास में योग तथा शक्तिवर्धक प्रशिक्षण का तालमेल बनाए रखते हैं तो आपको दोनों का लाभ मिलता है।

प्रातःकाल गहरी साँस लें और छोड़ें

योग हमें रोज़मर्रा के तनाव से मुक्त करता है और हमारे शरीर को साँसों की लय के साथ चलाने में मदद करता है। इसलिए *सूर्य नमस्कार, प्राणायाम* तथा श्वास-प्रश्वास के अन्य अभ्यासों के साथ मेरी सुबह शुरू होती है। लेकिन, मेरे लिए योग आसनों और मुद्राओं तक सीमित नहीं है। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि योग शरीर, मन और साँसों की लय में सामंजस्य लाकर आपको अनेक लाभ देता है। जब ऐसा सामंजस्य बन जाता है, जीवन अधिक शांत, प्रसन्न और पूर्णता के एहसास से भर जाता है।

मात्र शारीरिक अभ्यास नहीं

खिलाड़ी होने के नाते, हमें शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अभ्यास करने के लिए सुविधाएँ तथा साज़-सामान मिलते हैं लेकिन मानसिक स्वास्थ्य के लिए कोई उपकरण नहीं होता। मानसिक स्वास्थ्य तो योग से ही मिल सकता है। किसी भी प्रतियोगिता को जीतने के लिए सबसे मूल्यवान तो आत्मबल ही होता है।

"इसके साथ ही, वेटलिफ्टिंग के लिए शारीरिक ताकत बढ़ाने में मांसपेशियाँ अक्सर सख्त हो जाती हैं। योग के जादू से पेशियों को आराम मिलता है और शरीर में लचीलापन आता है।

योग – परिवर्तन का वाहक

पिछले 5-6 वर्षों से, योग प्रायः हर व्यक्ति की जीवनचर्या का अंग हो गया है। जब से हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र में पारित करवाया है, योग अब मात्र स्वस्थ जीवन जीने की भारतीय जीवन-शैली ही नहीं रह गया है, बल्कि विश्वव्यापी हो गया है। मैं तो योग को स्वस्थ जीवन की वैश्विक कला कहूँगी। एक बार आप योग का अभ्यास शुरू कर दें, आप के शरीर-मन में निरंतर सुधार आते ही रहेंगे।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

जावेद अशरफ़
फ्रांस में भारत के राजदूत

आठवाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस शीघ्र ही आने वाला है। इस समय, मुझे सितम्बर 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमंत्री के प्रथम भाषण की याद आ रही है जिसमें उन्होंने संयुक्त राष्ट्र से 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किए जाने का आग्रह किया था। पारम्परिक विदेश नीति के दृष्टिकोण से, यह एक साहसिक, कल्पनाशील और नवीन प्रयास था। इसका उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र चार्टर के मुख्य सिद्धांतों और मानवता के मूलभूत मूल्यों – स्वस्थ व्यक्ति, सद्भावनापूर्ण समाज, शांतिपूर्ण विश्व और सस्टेनेबल गृह – में निहित है। प्रधानमंत्री के प्रस्ताव को अभूतपूर्व समर्थन मिला। 193 सदस्यों वाले संयुक्त राष्ट्र के 170 से अधिक देश इस प्रस्ताव में सह प्रायोजक थे और कुछ ही सप्ताह में यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हो गया।

पिछले सात वर्षों में, सर्वांगीण जीवन-शैली और शारीरिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य आदि के लिए भारत का यह प्राचीन उपहार आज विश्व की संपदा और अंतरराष्ट्रीय आंदोलन बन गया है। इसकी सफलता संयुक्त राष्ट्र महासभा पर निर्भर नहीं है बल्कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर प्रत्येक देश के करोड़ों लोगों की स्वैच्छिक भागीदारी पर निर्भर है। उम्र, लिंग, नस्ल, धर्म, आस्था, भाषा, संस्कृति, पेशा, रुचियों से ऊपर उठ कर, विश्व भर के लोग इसमें भागीदारी करते हैं। आज के इस विभाजित विश्व में साझा हित के लिए मानवता को जोड़ने वाला सबसे बड़ा अभियान अंतरराष्ट्रीय योग दिवस ही है।

29 मई को 'मन की बात' कार्यक्रम में अपने सम्बोधन में माननीय प्रधानमंत्री ने कहा कि विश्व को जोड़ने की योग की क्षमता को 21 जून का वैश्विक 'योग रिंग' कार्यक्रम पूरी तरह व्यक्त करता है। इस कार्यक्रम में, विश्व में पूर्व से पश्चिम तक, विभिन्न समय-अंतरालों (टाइम ज़ोन) में सूर्योदय के साथ-साथ योग कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण किया जाएगा। यह कार्यक्रम इस वर्ष के आयोजन की थीम – मानवता के लिए योग – को व्यक्त करेगा। यह कोविड और संघर्षों से आहत विश्व को राहत देने के लिए प्रधानमंत्री और भारत के प्रयासों के अनुरूप है।

पिछले तीन दशकों से अधिक समय से विभिन्न शहरों में कार्य करते हुए मैंने समझा कि विश्व भर में, भले ही सीमित स्तर पर, योग को लेकर जागरूकता है। लेकिन अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन और भारत द्वारा योग के लाभों की निरंतर वैज्ञानिक आधार पर पुष्टि से, योग को विश्व समुदाय में व्यापक पहचान मिली है।

मेरा अंतिम कार्यकाल सिंगापुर में रहा। यहाँ का क्षेत्रफल मात्र 718 वर्ग किलोमीटर है। 2019 में, वहाँ विश्व योग दिवस के अवसर पर 120 स्थानों पर 180 योग सत्र आयोजित किए गए जिनमें सभी समुदायों के हजारों लोगों ने भाग लिया। इनमें अनेक सत्र वृद्धाश्रमों, अस्पतालों, स्कूलों, कॉर्पोरेट ऑफिसों और सामुदायिक केन्द्रों में आयोजित किए गए। उनमें से ज़्यादातर आयोजन स्थानीय संस्थानों ने किए। सिंगापुर सरकार के स्वस्थ जीवन से जुड़ा स्वयंसेवी संगठन 'एसजी एक्टिव' ने इन प्रयासों में प्रमुख भागीदारी की। अब इन संस्थानों के नियमित कार्यों में योग को शामिल कर लिया है।

फ्रांस और यूरोप के अन्य भागों में मुझे योग का व्यापक अभ्यास नज़र आया। फ्रांसीसी योग शिक्षकों द्वारा चलाए जा रहे संस्थानों में हज़ारों सदस्य हैं। मुझे अनेक पेशे से जुड़े व्यक्तियों, सिनेमा और मनोरंजन उद्योग की हस्तियों, कॉर्पोरेट अधिकारियों, विभिन्न कार्यालयों के कर्मचारियों, खेल प्रशिक्षकों आदि ने बताया कि वे नियमित रूप से प्रातःकाल योग का अभ्यास करते हैं। इनमें से कई लोग तो पिछले दो दशकों से योग कर रहे हैं। एक वित्तीय निवेशक ने बताया कि उनके योगाभ्यास और पर्यावरण-अनुकूल स्वच्छ ऊर्जा वाले उद्यमों में उनके निवेश के बीच सीधा सम्बंध है।

2020 और 2021 के लॉकडाउन के दौरान विश्व भर में वर्चुअल सत्र हुए जिनमें औसतन और भी ज़्यादा लोगों ने भाग लिया। आयुर्वेद और योग में दिलचस्पी इसलिए भी बढ़ गई क्योंकि महामारी ने लोगों के मन में अकेलापन, बेचैनी, अनिश्चितता, डर और तनाव बढ़ा दिए। रोग-प्रतिरोधक क्षमता, आरोग्य, शक्ति और प्रतिरोध के साथ-साथ भावनात्मक तथा मनोवैज्ञानिक स्तर पर संतुलन, दुख-सुख में समभाव और सकारात्मकता बढ़ाने की प्रबल इच्छा पैदा हुई। इन परिस्थितियों में लोग बड़ी संख्या में योग और आयुर्वेद की तरफ आकर्षित हुए ताकि उनकी समस्याओं का समग्र और टिकाऊ समाधान हो सके।

योग भारत की सभ्यता और आध्यात्मिक धरोहर में निहित है लेकिन इसे अपनाकर विश्व ने यह दिखाया कि योग किसी एक धर्म और आस्थाओं से बंधा नहीं है, न ही यह संतों, भिक्षुओं और आध्यात्मिक गुरुओं का आश्रय है। यह हरेक व्यक्ति के लिए सुलभ है। इसे अपनाने में बहुत समय भी नहीं लगता और इसे सामान्य-जीवनचर्या में अपनाया जा सकता है। इससे शारीरिक शक्ति, संतुलन, शरीर की लोच और गतिशीलता, मानसिक समभाव, आंतरिक शांति, ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता और चेतना को बल मिलता है। योग आंतरिक बदलाव के जरिए स्वास्थ्य में सुधार लाता है और खराब जीवनशैली से जुड़े रोगों से मुक्ति दिलाता है। इसके साथ ही, यह सोचने और जीने का ऐसा तरीका है जिसका मानवीय और भौतिक संपर्कों के सभी पक्षों पर प्रभाव पड़ता है। विश्व भर में, ख़ास तौर से युवाओं में, योग का जिस तरह तीव्रता से प्रचार-प्रसार हो रहा है, वही इसके लाभों और महत्व का सशक्त प्रमाण है।

योग : जीवन की एक शैली
योग साधकों की लोगों से अपील

माननीय प्रधानमंत्रीजी के संकल्प के तहत, योग, जो कि मन और शरीर को एक करने की साधना है, अब विश्व को एक कर रहा है। दूरदर्शन की टीम ने योग गुरुओं और छात्रों के साथ बातचीत कर विश्व में योग की बढ़ती लोकप्रियता पर उनके विचार जाने।

"योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह दुनिया भर में भारतीय संस्कृति का संदेशवाहक है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के 8वें संस्करण का विषय 'मानवता के लिए योग' है, यह भारत की विरासत को परिभाषित करता है। जीवन के मार्ग के रूप में योग, मानव जाति के लिए और विश्व शांति के लिए एकमात्र रास्ता है।"

– योग गुरू आचार्य विष्णु शंकर मिश्रा

"हम अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के आठवें संस्करण का जश्न मनाने जा रहे हैं और मैं सभी से अपील करता हूँ कि योग को सिर्फ एक दिन के लिए न अपनाएँ, बल्कि इसे जीवन का एक तरीका बनाएँ। योग का अभ्यास करें, योगी बनें, उपयोगी बनें, सहयोगी बनें, और निरोगी बनें, और इस अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को एक भव्य सफलता बनाएँ।"

– योग गुरू आचार्य प्रतिष्ठा जी

"हमारे माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'मन की बात' में योग की बात की है। यह लोगों में जागरूकता पैदा करेगी और योग को सही मायने में बढ़ावा भी देगी। योग के एक छात्र के रूप में, मैं योग को न केवल एक आसन के रूप में बल्कि जीवन जीने की एक कला के रूप में भी बढ़ावा देना चाहता हूं।"

– आशीष यादव,
छात्र-कैवल्यधाम योग संस्थान

"आज के युवा जिस तरह का तनावपूर्ण जीवन जीते हैं, योग इसके लिए रामबाण है। मैं चाहता हूँ कि आज के युवा योग को ठीक उसी तरह सीखें और समझें जैसे योग का एक छात्र करता है।"

– श्री आयुष आर्य,
छात्र-कैवल्यधाम योग संस्थान

योग : स्वस्थ जीवन का आधार

संजीव मेहता
प्रेसिडेंट, फिक्की एवं सीईओ तथा एमडी,
हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड

योग की उत्पत्ति लगभग 5000 वर्ष पूर्व उत्तर भारत में हुई थी। योग एक अत्यंत परिष्कृत विज्ञान पर आधारित आध्यात्मिक अनुशासन है, जो मन और शरीर के बीच सामंजस्य लाने पर केंद्रित है। 'योग शब्द संस्कृत मूल 'युज' से बना है, जिसका अर्थ है 'जुड़ना' या 'एकजुट होना'। भारत में योग करने, सिखाने और प्रचार-प्रसार करने की पुरानी परम्परा रही है।

आधुनिक समय में योग को जनांदोलन बनाने में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अहम योगदान रहा है। अपने सार्वजनिक भाषणों से लेकर स्वयं योग का अभ्यास करके, वह दूसरों के लिए एक उदाहरण पेश करते हैं। योग, फिटनेस और वैकल्पिक दवा पद्धति पर उनके ध्यान ने स्वस्थ जीवन के विभिन्न आयामों को जनमानस की चेतना का केंद्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का विचार पहली बार माननीय प्रधानमंत्रीजी ने 27 सितंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) में अपने भाषण के दौरान व्यक्त किया था। इसके बाद, भारत के स्थाई प्रतिनिधि अशोक मुखर्जी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में मसौदा प्रस्ताव पेश किया। इस पहल को कई वैश्विक नेताओं का समर्थन मिला। कुल 177 राष्ट्रों ने प्रस्ताव को सह-प्रायोजित किया, जो इस तरह के किसी भी यूएनजीए प्रस्ताव के लिए सह-प्रायोजकों की सबसे अधिक संख्या है। इस तरह 21 जून आधिकारिक रुप से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया गया।

वर्तमान में लगभग 190 देशों में विश्व स्तर पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया जाता है। भारत के सभी उच्चायोग और विदेशों में भारतीय दूतावासों में भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को मनाया जाता है।

भारत में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सुबह सामूहिक योग प्रदर्शन का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर सभी क्षेत्रों के लोग भाग लेते हैं, साथ ही स्कूल और कॉलेज के छात्र-छात्राओं के साथ-साथ आम जनता भी शामिल होती है।

इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की थीम 'मानवता के लिए योग' है। देश के विभिन्न हिस्सों में 100 विभिन्न संगठनों द्वारा 100 स्थानों पर 100 दिनों तक योग प्रदर्शन आयोजित हो रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय

योग दिवस का मुख्य समारोह 21 जून को कर्नाटक के मैसूरू में आयोजित किया जा रहा है। मुख्य समारोह एक निर्दिष्ट स्थान पर आयोजित होगा और लोग अपने घर से भी इसमें शामिल हो सकते हैं क्योंकि इस कार्यक्रम को विभिन्न सोशल मीडिया और डिजिटल चैनलों द्वारा लाइव कवर किया जाएगा।

उद्योग जगत भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता है। असल में कर्मचारियों की भलाई के महत्व को ध्यान में रखते हुए उद्योग जगत बड़े पैमाने पर योग को अपना रहा है। कार्यस्थल पर योग सत्र से लेकर योग मुद्राओं में सहायता करने वाले डिजिटल एप्लिकेशन तक, ऐसे अनेक कदम उठाए जा रहे हैं। इस तथ्य की व्यापक स्वीकृति है कि कर्मचारी किसी भी संगठन की सबसे बड़ी पूंजी होते हैं और इन सारे कदमों से कर्मचारियों के तनाव में कमी, नई ऊर्जा के संचार और हौसले में बढ़ोतरी होती है।

ऐसे समय में जबकि दुनिया कई तरह के भू-रणनीतिक तनाव और व्यवधानों से गुजर रही है, आशा है कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मानवता को एकजुट करने का संदेश और खुशियाँ लेकर आएगा।

भारतीय महाकाव्य : काल और व्योम से परे

"हज़ारों किलोमीटर दूर जापान में रहने वाले लोग, जो हमारी भाषा नहीं जानते, जो हमारी संस्कृति से अधिक परिचित नहीं हैं, हमारी संस्कृति के प्रति उनकी निष्ठा, यह सम्मान, यह आदर बेहद प्रशंसनीय है- आखिर किस भारतीय को इस पर गर्व नहीं होगा!"

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के सम्बोधन में)

आचख्युः कवयः केचित्संप्रत्याचक्षते परे आख्यास्यन्ति तथैवान्ये इतिहासमिमं भुवि।

कुछ कवियों ने इस महाकाव्य का पहले पाठ किया है। अन्य अब बाँच रहे हैं। भिन्न कथावाचक भविष्य में भी इसके संदर्भ देंगे।

महान भारतीय महाकाव्य महाभारत से उद्धृत उपरोक्त छंद में उचित ही कहा गया है कि पौराणिक कथाओं की धरोहर समय, स्थान और पीढ़ियों की सीमाओं को लांघती है। कथाएँ जिनका न केवल प्रत्येक वर्ग के लोगों पर एक समान असर होता है, बल्कि जो फलदायक जीवन जीने के मूल्यों और नीतिशास्त्र से हमारा परिचय कराती हैं।

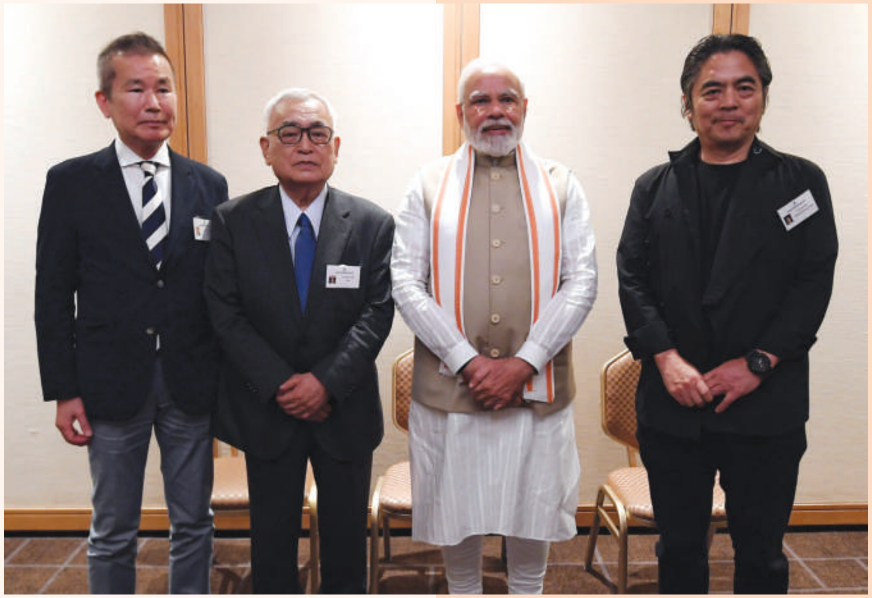

दो वर्ष पहले, महामारी से जूझ रही दुनिया का जब लॉकडाउन से सामना हुआ, तो भारतीयों ने खुद को दूरदर्शन पर रामायण और महाभारत जैसे दो क्लासिक धारावाहिकों के सामने पाया था। इन्हें देखते हुए एक ओर जहाँ वरिष्ठ जन पुराने समय को याद कर रहे थे, वहीं, युवा पीढ़ी का परिचय जीवन जीने की उस प्राचीन और आदर्श मूल्य पद्धति से हुआ, जिसे इन भारतीय ग्रंथों में बताया गया है।

महाभारत और रामायण जैसे पवित्र भारतीय पौराणिक महाकाव्यों को केवल भारतीय जनमानस ही प्रेरणा स्रोत के तौर पर नहीं देखता, अपितु दुनिया भर में अनेक लोग नैतिकता पर अंतर्दृष्टि के लिए इनका सम्मान करते हैं। यह मानव मस्तिष्क के उन जटिल तत्त्वों को उद्घाटित करते हैं जिन्होंने बाह्य जगत को सदा लुभाया है। हालिया 'मन की बात' सम्बोधन में आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जापान के लोगों के उन उदाहरणों का भी उल्लेख किया जो 'भारत के प्रति स्नेह और अद्भुत मोह मन में रखते हैं।' इसके उदाहरणस्वरूप, प्रख्यात कला निर्देशक **हिरोशि कोइके** के **द महाभारत प्रोजेक्ट** और जापान के प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक **यूगो साको** द्वारा 4K में रीमास्टर्ड रामायण का एनिमेटेड प्रस्तुतीकरण - **द लेजेंड ऑफ प्रिंस राम** के रूप में भारतीय महाकाव्यों के 'कलात्मक' प्रारूप का पुनर्निर्माण किया गया है।

ज़ाहिर है कि भारतीय इतिहास और संस्कृति विश्व के लिए धरोहर स्वरूप है, जो कि 'अनेकता में एकता' के विचार में निहित भारतीय अद्वितीयता और सर्वव्यापी

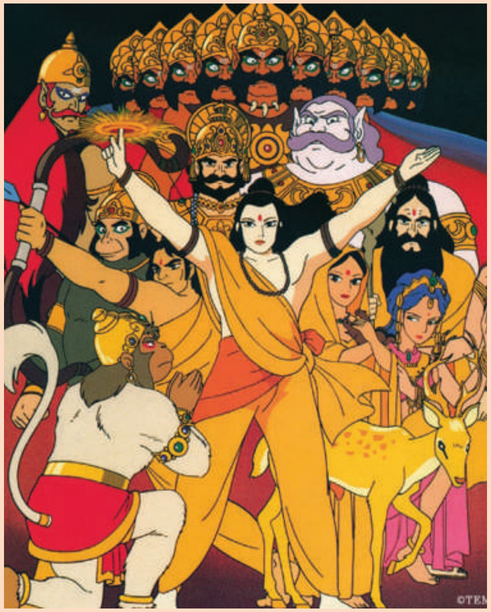

असर के प्रारूप को दुनिया के समक्ष पेश करती है।

वेदों और उपनिषदों जैसे प्राचीन भारतीय साहित्यिक ग्रंथ - 'वसुधैव कुटुम्बकम्' विश्व एक परिवार विचार को विश्व और भारत के लिए व्याख्यायित करते हैं। आज के आधुनिक समाज की नींव में सह-अस्तित्व की भावना को मज़बूत करने के लिए यह विचार आधारनुमा है। विदेशी जनसाधारण के समक्ष विविध भारतीय कलाएँ, प्राचीन परम्पराएँ; योग, आयुर्वेद आदि जैसे विभिन्न गुण भारत के गहरे असर को व्याख्यायित करते हैं।

भारतीय महाकाव्यों, पाकशैली, धर्मों, उत्सवों, अध्यात्म, सिनेमा, पौराणिक कथाओं और धरोहर का सम्पूर्ण विश्व पर एक समावेशी असर है, जो प्रत्येक भारतीय के हृदय को गर्व से भर देता है। इससे हमें नए वैश्विक संदर्भों वाले सहजीवन में विविधता और सांस्कृतिक सहक्रिया का बोध होता है।

रामायण : द लेजेंड ऑफ़ प्रिंस राम

भारतीय महाकाव्य पर 30 वर्ष पुरानी भारतीय-जापानी एनिमेटेड फिल्म को 4K में रीमास्टर किया जा रहा है।

भगवान राम के जीवन और संघर्षों का चित्रण करने वाला पौराणिक महाकाव्य रामायण समयातीत महान कृति है। 2020 में इस महान प्राचीन महाकाव्य पर **रामानंद सागर** कृत धारावाहिक के दूरदर्शन पर पुनः प्रसारण से इसमें फिर से लोकप्रियता और रुचि देखी गई थी।

माननीय प्रधानमंत्री मोदी की जापान यात्रा के दौरान इस महान भारतीय ग्रंथ के संबंध में रोचक संयोग प्रकाश में आया। यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने जापान की टीईएम प्रोडक्शन कम्पनी के **अत्सुशी मातसुओ** और **केंजी योशी** से मुलाकात की। इस तीस वर्ष पुरानी महत्वपूर्ण फिल्म को बनाने वाले दिग्गज हैं, जापान के प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक **यूगो साको** और भारत के मशहूर एनिमेटर **राम मोहन**।

करीब 40 वर्ष पहले, 1983 में यूगो साको भारत आए थे और उस दौरान उन्होंने पहली बार रामायण के बारे में जाना था। 'रामायण' उनके दिल को छू गई और उसके बाद उन्होंने उस पर गहन शोध आरंभ किया। वृत्तचित्र निर्देशक होने के बावजूद उनका मानना था कि रामायण की भव्यता और तेजस्विता को एनिमेटेड फॉर्मेट में ही ठीक तरीके से प्रदर्शित किया जा सकता है।

100,000 हस्तनिर्मित सेल्युलॉयड तस्वीरें बनाने वाले बेहतरीन एनिमेटर्स सहित इस कुशल निर्माण में भारत और जापान के 450 लोगों की भूमिका रही थी। साको ने वर्णन और परिधानों एवं स्थापत्य पक्ष पर शोध के लिए अनेक अकादमिकों, पुरातत्ववेत्ताओं एवं इतिहासकारों से कई महीनों तक विचार-विमर्श किया, क्योंकि इस पौराणिक कथा पर आधारित अपनी कृति के बारे में वह हर तरह से सचेत रहना चाहते थे।

फिल्म में प्राचीन भारतीय रीतियों और परम्पराओं को दिखाने के प्रति भारतीय एनिमेटर्स ने उनका कुशलता से मार्गदर्शन किया। जापानी निर्देशक के कौतुहल पर प्रधानमंत्री मोदी ने अपने 'मन की बात' संदेश में चुटकी लेते हुए कहा "(जैसे) भारत के लोग *धोती* कैसे पहनते हैं, *साड़ी* कैसे पहनते हैं, अपने बाल कैसे बनाते हैं, परिवारों में बच्चे एक-दूसरे का कैसे सम्मान करते हैं, और आशीर्वाद की परम्परा क्या है? सुबह-सवेरे उठकर घर के बड़ों को प्रणाम करना, उनका आशीर्वाद लेना आदि।"

अब, 30 वर्षों बाद इस एनिमेशन फिल्म को 4K में रीमास्टर किया जा रहा है। यह परियोजना जल्दी ही पूर्ण होगी। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा इस समयातीत महाकाव्य को एक बार फिर से पर्दे पर देखने की दी गई खबर से भारतीय सिनेप्रेमी वर्ग गर्व से भर उठा है।

द लेजेंड ऑफ प्रिंस राम का ट्रेलर देखने के लिए QR code scan करें

पीएम के प्रयासों से रामायण को मिली अंतरराष्ट्रीय पहचान : दीपिका

1987 में दूरदर्शन पर प्रसारित हुए रामानंद सागर के धारावाहिक 'रामायण' में सीता का किरदार निभाने वाली दीपिका चिखलिया से हमारी टीम ने ख़ास बातचीत की।

प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' कार्यक्रम में रामायण के एनिमेटेड प्रस्तुतीकरण, द लेजेंड ऑफ़ प्रिंस राम के 4K में रीमास्टर होने के उल्लेख से दीपिका जी आनंदित हैं।

"मुझे यह देखकर ख़ुशी हो रही है कि रामायण को कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर वाहवाही मिल रही है। COVID महामारी के समय में रामायण को टेलीविजन स्क्रीन पर वापस लाने का निर्णय माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई का था। वह हमारी भारतीय संस्कृति के मूल्य और समृद्धि को समझते हैं।"

"हमें अपनी समृद्ध संस्कृति के माध्यम से सब कुछ विरासत में मिला है, लेकिन इसे पर्याप्त महत्व नहीं मिला। अब प्रधानमंत्री के विज़न के माध्यम से हम समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के महत्व को समझने में सक्षम हैं और विश्व स्तर पर इसके लिए मान्यता प्राप्त कर रहे हैं।"

"भारतीय परम्पराओं और विरासत के बारे में जागरुकता पैदा करने के लिए रामायण का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया गया है। पीएम मोदी जी ने हमें हमारी संस्कृति और विरासत की सुंदरता को महत्व देने और उनका सम्मान करने में मदद की है। यह कदम निश्चित रूप से भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाला है।"

द महाभारत प्रोजेक्ट
भारतीय महाकाव्य पर हिरोशि कोइके का नाटकीय विवेचन

सांस्कृतिक आदान-प्रदान और कला से विश्व एकीकरण के प्रयास में, भारतीय महाकाव्य महाभारत पर हिरोशि कोइके की श्रेष्ठ नाटकीय रचना, सांस्कृतिक सहक्रिया के नए साक्ष्य के तौर पर है। 2011 में प्रख्यात रंगकर्मी और समकालीन जापानी रंगमच जगत का जाना-माना नाम हिरोशि कोइके सूनामी, तोहोकु भूकंप और फिर फुकुशिमा की परमाणु आपदा के बाद अपनी मातृभूमि के प्रति चिंतित थे। इसी दौरान वह राष्ट्रीयताओं और भाषाओं में बंटी दुनिया को एक साथ लाने की ज़रूरत के प्रति सजग हुए थे। तत्पश्चात् उन्होंने हिरोशि कोइके ब्रिज प्रॉजेक्ट की नींव रखी थी।

भारतीय महाकाव्य महाभारत को आधार बनाते हुए उन्होंने महत्वाकांक्षी अखिल-एशियाई अंतर-सांस्कृतिक थियेटर परियोजना की नींव रखी, जो सौहार्दपूर्ण सहजीवन के लक्ष्य के प्रति मानव मस्तिष्क की विभिन्न परतों और अभ्यासों की यात्रा तय करती है।

कम्बोडिया से शुरू, इस बहु-वार्षिक परियोजना में भारत, इंडोनेशिया, थाइलैंड, मलेशिया, कम्बोडिया और जापान के अभिनेताओं और नर्तकों को शामिल कर, दर्शकों के लिए ख़ूबसूरत चित्रपट में भारतीय 'महाभारत' के मूलतत्व को पेश किया गया है।

प्रतिवर्ष हिरोशि कोइके एशिया के एक देश में, स्थानीय कलाकारों और संगीतकारों के साथ महाभारत के अंशों का मंचन करते हैं। हिरोशि कोइकेजी क्लासिकल और पारम्परिक एशियाई प्रदर्शन कलाओं की पृष्ठभूमि वाले कलाकारों को एक साथ लाते हैं। महाकाव्य पर आधारित यह रंगमंचीय प्रदर्शन, अपनी मातृभाषा में बोलने वाले कलाकारों के कारण अन्य प्रदर्शनों से सर्वथा अलग दिखता है। इसके अलावा, गहन कोरियोग्राफी से मिले-जुले इस प्रदर्शन में जावाई नृत्य, बाली नृत्य, थाई नृत्य जैसी संस्कृतियों का समन्वय विशुद्ध कलात्मक शैली में दिखता है। इसका लक्ष्य हमारे समाज में विविधता और सह-अस्तित्व के महत्व को सबके सामने लाना और यह बताना है कि शांति का प्रारूप कैसा होना चाहिए।

भारतीय महाकाव्य महाभारत ने गत दो हज़ार वर्षों से एशिया में अनेक नृत्यों, काव्य, नाटकों, संगीत, स्थापत्य, चित्रकला और कठपुतली खेलों को प्रेरित किया है।

द महाभारत प्रोजेक्ट की ट्रेलर देखने के लिए QR code scan करें

हिरोशि कोइके का 'थिएटरकनेक्ट' : केशवन नम्बूदिरी

'द महाभारत प्रोजेक्ट' के भारतीय सहयोगी 'थिएटरकनेक्ट' के मुख्य स्तम्भ पी.एन. केशवन नम्बूदिरी ने इस परियोजना के बारे में और हिरोशि कोइके के बारे में दूरदर्शन की टीम से बातचीत की।

कोइके के नाटक को 4 अध्यायों में एशिया के विभिन्न हिस्सों में निर्मित और प्रदर्शित किया गया था। इस नाटक का दूसरा अध्याय 2014 में केरल के अंतरराष्ट्रीय रंगमंच महोत्सव में प्रदर्शित किया गया था। ओट्टपलम, पलक्कड़ में स्थित एक थिएटर समूह, 'थिएटरकनेक्ट' इस अध्याय के सह-निर्माता और भागीदार थे।

केशवन नम्बूदिरी ने बताया कि हिरोशि कोइके की 'द महाभारत प्रोजेक्ट' के अध्याय 2 पर काम करने का उनका अनुभव व्यावहारिक और बहुत ज्ञानवर्धक था। "वह (हिरोशि कोइके) जिस तरह से काम करते हैं, जिस तरह से वह नाटक करते हैं, वह देखने लायक है। उनकी 'जापानी' कार्य संस्कृति और काम करने के तरीके निश्चित रूप से उनके काम में परिलक्षित होते हैं और यह सीखना दिलचस्प है।"

"द महाभारत प्रोजेक्ट' दिल्ली, महाराष्ट्र, केरल, बंगाल, और अन्य दक्षिण एशियाई देशों जैसे मलेशिया, थाईलैंड, वियतनाम, जापान आदि सहित भारत के सभी हिस्सों के कलाकारों के साथ एक बहुसांस्कृतिक उत्पादन था। थिएटर कनेक्ट के माध्यम से हिरोशि के साथ काम करने का एकमात्र उद्देश्य भारतीय कलाकारों के लिए विभिन्न देशों, जातियों और भाषाओं के कलाकारों के साथ काम करने में सक्षम होने के लिए एक अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए एक वातावरण का निर्माण करना था।"

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp · May 29

ଓଡ଼ିଶାର ବିଭିନ୍ନ ସ୍ଥାନ ସମେତ ଢେଙ୍କାନାଳ ଓ ଅନୁଗୋଳ ଜିଲ୍ଲାର ଭାଇ ଭଉଣୀ ଓ ଯୁବକ ମାନେ ଆଜି ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ @narendramodi ଜୀଙ୍କ #MannKiBaat କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମକୁ ଦେଖି ଉତ୍ସାହର ସହ ଶୁଣିଛନ୍ତି। ଦେଶର ଭାଷା, ଲିପି, କଥିତ ଭାଷାର ସମୃଦ୍ଧ ଭଣ୍ଡାର ଓ ଆମର ସାଂସ୍କୃତିକ ପରିଚୟ ବିଷୟରେ ଆଲୋଚନା କରିଥିବାରୁ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କୁ ଧନ୍ୟବାଦ।

6 · 182 · 311

Basavaraj S Bommai @BSBommai

Hon'ble PM @narendramodi Ji mentioned our own girl Kalpana from Karnataka in '#MannKiBaat' as an embodiment of 'Ek Bharat, Shreshthta Bharat'. Kalpana from Uttarakhand, passed class X & learnt Kannada in just 3 months scoring 92% with the help of her teacher Prof. Taramurthy.
1/2

Devendra Fadnavis @Dev_Fadnavis

Joined #MannKiBaat from #Nagpur with MLA @krishnakhopde ji, our @BJP4Nagpur colleagues and citizens from Nagpur.
Hon PM @narendramodi ji talked about progress of Startups, women participation in development, upcoming #InternationalYogaDay & EkBharatShreshthBharat !

Mann Ki Baat Updates मन की बात अपडेट्स

K.Annamalai @annamalai_k

Thank our Hon PM Shri @narendramodi avl for highlighting in today's #MannKiBaat

1. Shri @svembu avl for the exemplary work he is doing in mentoring start up founders in rural parts of TN & India. He is taking the next generation of start up's to our tier - II & III cities
1/3

12:44 PM · May 29, 2022 · Twitter for iPhone

Vanathi Srinivasan @VanathiBJP

Thanjavur Doll is as beautiful as it is, it is also writing a new story of women empowerment. PM @narendramodi
#MannKiBaat

Amit Shah

Shivprakash @shivprakashbjp

तीर्थसेवा के बिना तीर्थयात्रा अधूरी है।चारधाम यात्रा करते समय हम भी स्वच्छता व्रत अपना कर तीर्थसेवा कर सकते है।
श्री मनोज बेंजवाल (रुद्रप्रयाग) एवं श्री सुरेंद्र बग्वाड़ी (गुप्तकाशी) हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत हो सकते हैं।
#MannKiBaat
Translate Tweet

PMO India and 2 others

12:24 PM · May 29, 2022 · Twitter for Android

Dr Harsh Vardhan @drharshvardhan

कोरोना महामारी ने हम सभी को यह एहसास भी कराया है कि हमारे जीवन में स्वास्थ्य का कितना अधिक महत्व है, और योग इसमें कितना बड़ा माध्यम है।

लोग यह महसूस कर रहे हैं कि योग से physical, spiritual और intellectual well-being को भी कितना बढ़ावा मिलता है।

#MannKiBaat
Translate Tweet

Yogi Adityanath @myogiadityanath

भारतीय मनीषा द्वारा विश्व को प्रदान की गई अमूल्य भेंट 'योग' को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मान दिलाने वाले आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने आज @mannkibaat में 8वें 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' की थीम 'Yoga for humanity' होने का उल्लेख किया है।

यह थीम 'योग' की मूल भावना को प्रकट करती है।
Translate Tweet

12:56 PM · May 29, 2022 · Twitter Web App

Dr Mansukh Mandaviya @mansukhmandviya

तीर्थ यात्रा की तरह, तीर्थ सेवा भी ज़रूरी है।

बाबा केदार के दर्शन करने आने वाले श्रद्धालु दर्शन के साथ-साथ स्वच्छता का भी ध्यान रखते है। मेरा आग्रह की आप भी तीर्थ यात्रा के दौरान स्वच्छता का ध्यान रखें।

#MannKiBaat
Translate Tweet

Syed Shahnawaz Hussain @ShahnawazBJP

इस महीने 5 तारीख को देश में Unicorn की संख्या 100 के आंकड़े तक पहुंच गई है। इन Unicorns का कुल valuation 330 billion dollar, यानी, 25 लाख करोड़ रुपयों से भी ज्यादा है।

हमारे कुल Unicorn में से 44 पिछले साल बने थे। इस वर्ष के 3-4 महीने में ही 14 और नए Unicorn बन गए। #MannKiBaat
Translate Tweet

11:10 AM · May 29, 2022 · Twitter Web App

Murlidhar Mohol @mohol_murlidhar

पंतप्रधान मा.श्री. @narendramodi जी यांचा 'मन की बात' हा संवाद आपल्या जनसंपर्क कार्यालयासमोर एलईडी स्क्रिनच्या माध्यमातून सामुहिकरित्या पाहिला. यावेळी कोथरुड परिसरातील नागरिकांची उत्स्फूर्तपणे असलेली उपस्थिती मा. मोदीजींच्या लोकप्रियेतवर मोहोर उमटवणारी होती.
Translate Tweet

BJP and 2 others

3:44 PM · May 29, 2022 · Twitter for iPhone

Dr. S. Jaishankar @DrSJaishankar

பிரதமர் மோடி தாரகைகள் கைவினைப் பொருட்கள் விற்பனை அங்காடியிடம் இருந்து பரிசாகப் பெற்ற சிறப்பு தஞ்சாவூர் பொம்மையைப் பற்றி பேசினார். இது நம் நாட்டில் பெண்கள் அதிகாரத்துடன் முன்னேற்றப் பாதையில் செல்வதற்கான சிறந்த எடுத்துக்காட்டாகத் திகழ்கிறது.
Translate Tweet

> **PMO India** @PMOIndia · 2d
> PM @narendramodi talks about something interesting which he received from Tamil Nadu... #MannKiBaat

12:51 · 29 May 22 · Twitter for iPhone

Keshav Prasad Maurya @kpmaurya1

हमारे यहाँ जैसे तीर्थ यात्रा का महत्व होता है, वैसे ही, तीर्थ-सेवा का भी महत्व बताया गया है, और मैं तो ये भी कहूँगा, तीर्थ सेवा के बिना, तीर्थ यात्रा भी अधूरी है। देवभूमि उत्तराखंड में से कितने ही लोग हैं जो स्वच्छता और सेवा की साधना में लगे हुए हैं।

- मा. पीएम
#MannKiBaat
Translate Tweet

Sarbananda Sonowal
@sarbanandsonwal

Listened to Hon'ble PM Shri @narendramodi Ji's inspirational #MannKiBaat programme with Booth Karyakartas and locals of 15 No. Booth (Lakshminagar) under Khanikar Mandal in Dibrugarh.

Urged all to join Modi ji call & make International Day of Yoga celebrations a grand success.

2:40 PM · May 29, 2022 · Twitter for Android

RajyavardhanRathore
@Ra_THORe

हमारे देश में इस बार 'अमृत महोत्सव' को ध्यान में रखते हुए देश के 75 प्रमुख स्थानों पर भी 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' का आयोजन होगा।

इस अवसर पर कई संगठन और देशवासी ने अपने-अपने स्तर पर अपने-अपने क्षेत्र की खास जगहों पर कुछ न कुछ Innovative करने की तैयारी कर रहे हैं।

#MannKiBaat

Translate Tweet

narendramodi_in and 4 others

Sridhar Vembu
@svembu

Thank you @narendramodi ji @PMOIndia and @startupindia for the honour of mentioning me in the @mannkibaat program today.

On behalf of our employees, rural students and well-wishers, I am deeply grateful. 🙏🙏🙏

1:21 PM · May 29, 2022 · Twitter for Android

P C Mohan
@PCMohanMP

Zoho Founder-CEO @svembu Ji moved from Silicon Valley to Mathalamparai, a small village near Tenkasi, in the picturesque Western Ghats.

Sridhar Ji has been nurturing local talent and empowering rural youth with village offices across Tamil Nadu.

Kudos Sir!

#MannKiBaat

Narendra Modi and 9 others

Y. Satya Kumar
@satyakumar_y

An inspirational story from Andhra Pradesh!

Ram Bhupal Reddy Ji donated his entire retirement benefits for the education of our daughters.

#MannKiBaat

As we mark Azadi Ka Amrit Mahotsav, let us collectively work and make India stronger and more prosperous ~ Hon PM Shri @narendramodi

#MannKiBaat May 29, 2022

Tuned in to Hon'ble PM Shri @narendramodi ji's #MannKiBaat along with the local residents, of my own Booth at Nandanayakbar: Nandigram.
He narrated about his recent experiences in Japan & we were pleasantly surprised with Japan's connection with Mahabharat & Ramayana.

Manohar Lal
@mlkhattar

भारत की ऊर्जावान युवा-शक्ति देश के कोने-कोने से उभर कर सामने आ रही है और अपने टैलेंट के बल पर गाँव-शहर में रोज़गार के अवसर सृजित कर रही है। #MannKiBaat के माध्यम से Start-Up के विषय पर चर्चा कर उनका मार्गदर्शन करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी का आभार।

Translate Tweet

Pushkar Singh Dhami
@pushkardhami

आज मन की बात में प्रधानमंत्री जी ने "तीर्थ सेवा के बिना तीर्थ यात्रा भी अधूरी है" का मन्त्र दिया है जिसका पालन करते हुए चार धाम में आने वाले सभी श्रद्धालु स्वच्छता अभियान से जुड़कर इस मंत्र को साकार कर सकते हैं।

@swachhbharat

Translate Tweet

Himanta Biswa Sarma
@himantabiswa

On 21st June, the world will mark Yoga Day. The theme this year is 'Yoga For Humanity.' - Hon PM Shri @narendramodi Ji in #MannKiBaat today

Ajay Bhatt
@AjaybhattBJP4UK

इस समय हमारे देश में उत्तराखण्ड के 'चार-धाम' की पवित्र यात्रा चल रही है।

'चार-धाम' और खासकर केदारनाथ में हर दिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु वहां पहुंच रहे हैं।

लोग, अपनी 'चार-धाम यात्रा' के सुखद अनुभव share कर रहे हैं।
:पीएम श्री @narendramodi जी।
#MannKiBaat

Translate Tweet

13:25 · 29 May 22 · Twitter for Android

Don't litter Kedarnath, maintain dignity of pilgrimage sites: PM

Times News Network

New Delhi: Prime Minister Narendra Modi on Sunday raised concerns over dumping of garbage by devotees in Kedarnath amid the ongoing Char Dham yatra and urged people to maintain the dignity of pilgrimage sites.

In his monthly radio address 'Mann ki Baat', Modi said, "I have also seen that some devotees are also very sad because of the filth being spread by some pilgrims in Kedarnath. Many people have expressed their views on social media as well. Going on a holy pilgrimage and coming across a heap of filth there is not right... We go there to experience it (the divinity of Dev Bhoomi), so it is our responsibility to maintain this divinity and spirituality."

AP

Just as a pilgrimage is important, equally important is 'teertha sewa', Modi said in Mann ki Baat

The PM said while thousands of devotees are reaching Kedarnath every day and are sharing pleasant experiences, the filth being dumped has pained many pilgrims. The piles of garbage, particularly plastic left over by pilgrims in this ecologically-sensitive place, has become a cause of concern for experts as this has the potential to lead to erosion and cause landslides. This also affects the natural vegetation in the region. Recently, photographs of garbage piles went viral on social media platforms, which prompted netizens to demand severe punishment of offenders. Some have also urged the government to cap the number of tourists per season.

During his radio address, Modi said while there have been several complaints, there are some good initiatives taken by people in Uttarakhand. Many devotees are cleaning the areas around their places of stay, while others are collecting garbage along the travel route, he mentioned.

ସ୍ୱଚ୍ଛ ଭାରତ ଅଭିଯାନର ମୂଲ୍ୟବୋଧ ସ୍ମରଣ କରାଇଲେ

ଭାରତରେ ୟୁନିକର୍ଣ୍ଣ ସଂଖ୍ୟା ୧୦୦ ଟପିଲାଣି

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ 'ମନ୍ କୀ ବାତ୍'

नए भारत की सामर्थ्य का प्रतीक है स्टार्टअप की सफलता

महिलाओं को स्वावलंबी बना रहे स्वयं सहायता समूह

MANN KI BAAT

PM: India now has 100 unicorns worth over Rs 25 lakh crore

EXPRESS NEWS SERVICE
NEW DELHI, MAY 29

HIGHLIGHTING THAT even in the current phase of the global pandemic, Indian start-ups have been creating wealth and value, Prime Minister Narendra Modi on Sunday said that India has reached a landmark figure of 100 unicorns with a valuation of more than $300 billion.

Addressing the nation during the Mann Ki Baat the PM emphasised that India's start-up ecosystem is not limited to just big cities, but entrepreneurs are emerging from smaller cities and towns as well.

"On the 5th of this month, the number of unicorns in the country has reached the figure of 100 and you surely know that a unicorn is a start-up worth at least seven and a half thousand crore rupees. The total valuation of these Unicorns is more than 330 billion dollars, that is, more than 25 lakh crore rupees. Certainly, this is a matter of pride for every Indian," Modi said.

The PM said that a record 44 unicorns were established last year amidst the pandemic. "You will also be surprised to know that out of our total unicorns, 44 came up last year. Not only that, 14 more unicorns were formed anew in 3-4 months this year. This means that even in this phase of the global pandemic, our start-ups have been creating wealth and value," he said.

Modi highlighted that the average annual growth rate of Indian unicorns is more than those of the USA, UK, and many other countries. "Analysts also say that in the coming years there will be a sharp spike in these numbers. The good thing is that our unicorns are diversifying. They are operating in many fields like e-commerce, fin-tech, ed-tech, bio-tech," Modi said.

PM Narendra Modi spoke about India's start-up ecosystem

"Another thing which I consider more important is that the world of start-ups is reflecting the spirit of New India. Today, India's start-up ecosystem is not limited to just big cities; entrepreneurs are emerging from smaller cities and towns as well. This shows that in India, the one who has an innovative idea, can create wealth," Modi said.

Modi further pointed out that in the world of start-ups, right mentoring is important. "...Another thing that is important in the world of start-ups is, right mentoring... right guidance. A good mentor can take a start-up to new heights... can guide the founders in every way toward the right decision. I am proud that there are many such mentors in India who have dedicated themselves to promote start-ups," the PM said.

100 unicorns a matter of pride for all Indians: PM

EXPRESS NEWS SERVICE @ New Delhi

INDIA touched the milestone of having 100 unicorns on May 5, giving a boost to the startup ecosystem in the country, said Prime Minister Narendra Modi on Sunday. The total valuation of these unicorns is more than more than ₹25 lakh crore rupees, he added.

During his 'Maan Ki Baat' radio programme, Modi termed the milestone as a "matter of pride for every Indian". "You will also be surprised to know that out of our 100 unicorns, 44 came up in 2021 and 14 more unicorns were formed in the last three to four months this year; this means that even in the phase of the global pandemic, start-ups have been creating wealth and value," he said.

Out of our 100 unicorns, 44 came up in 2021 and 14 more were formed in the last three to four months...even in the phase of global pandemic, start-ups have been creating wealth

PM Narendra Modi

The PM further said average annual growth rate of Indian unicorns has been more than those of the US, the UK and many other countries. "People with innovative ideas can create wealth in India and India's start-up ecosystem is not limited to just big cities; entrepreneurs are emerging from smaller cities and towns as well. This shows that in India, the one who has an innovative idea can create wealth," the PM said. He cited persons like Sridhar Vembu, Madan Palki and Meera Shenoy, who have carved a niche for themselves in the start-up world, to encourage the people.

The PM quoted an innovative initiative in Tamil Nadu, named 'Tharagaigal Kaivinai Porutkal Virpanai Angad' under which Thanjaur Dolls and bronze lamps are produced by women associated with 22 self-help groups in Thanjavur. "India is a rich treasure house of many languages, scripts and dialects. Varied attire, cuisine and culture in different regions are our hallmark. As a nation this diversity strengthens us and keeps us united," he told the listeners.

The PM also spoke at length about the momentum of Swachh Bharat campaign. He urged the citizens to participate in the International Yoga Day on June 21. "The pandemic has made all of us realise the overarching importance of health in our lives and Yoga being a great medium in ensuring the same. People are experiencing how yoga is boosting their physical, spiritual and intellectual well-being."

அமெரிக்கா உள்ளிட்ட வளர்ந்த நாடுகளை விட

இந்தியாவில் யூனிகார்ன் நிறுவனங்கள் சாதனை

Diversity strengthens us, says Modi

SPECIAL CORRESPONDENT
NEW DELHI

Prime Minister Narendra Modi on Sunday praised the diversity of languages and scripts in the country.

Sharing the example of Kalpana, a native of Uttarakhand, who learned Kannada in three months and scored 92 marks in the Class 10 examination in Karnataka, Mr. Modi said "our country is a rich treasure house of many languages, scripts and dialects".

"Varied attire, cuisine and culture in different regions is our hallmark. As a nation this diversity strengthens us and keeps us united," the Prime Minister said on Sunday in his radio address 'Mann Ki Baat'. He urged people to strengthen the linguistic diversity of the country.

CONTINUED ON ▸ PAGE 8

अलग-अलग भाषाएं और बोली देश की शक्तिः मोदी

मन की बात

नई दिल्ली, एजेंसियां। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि हमारे देश में कई भाषाओं, लिपियों और बोलियों का समृद्ध खजाना है। अलग-अलग पहनावा, खानपान और संस्कृति हमारी पहचान है। ये विविधता, एक राष्ट्र के रूप में हमें अधिक सशक्त करती है। एकजुट रखती है। हमें शक्ति देती है।

अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात में प्रधानमंत्री ने उत्तराखंड के जोशीमठ की छात्र कल्पना का जिक्र किया। कहा, कल्पना ने हाल ही में कर्नाटक में 10वीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण की। अहम बात यह है कि उसे कुछ समय पहले तक कन्नड़ नहीं आती थी, लेकिन उसने न केवल तीन महीने में यह भाषा सीखी, बल्कि 92वें नंबर पर सफलता हासिल कर खुद को साबित कर दिखाया। प्रधानमंत्री ने उत्तराखंड में चार धाम यात्रा कर रहे श्रद्धालुओं से साफ सफाई का ध्यान रखने का आग्रह किया। कहा, चार धाम की यात्रा जरूर करें पर सफाई भी रखें।

વડાપ્રધાન નરેન્દ્ર મોદીએ ''મન કી બાત'' ઓનલાઇન કાર્યક્રમ દ્વારા દેશવાસીઓને સંબોધિત કર્યા

ભારતમાં યુનિકોર્નની સદી પૂર્ણ, સ્ટાર્ટઅપ બન્યું નવા ભારતની ઓળખ : મોદી

धामों की पवित्रता और स्वच्छता सबकी जिम्मेदारी : प्रधानमंत्री

- प्रधानमंत्री ने तीर्थयात्रियों से की यात्रा मार्गों पर कूड़ा न फैलाने की अपील
- मन की बात कार्यक्रम में चारधाम यात्रा के महत्व को रेखांकित किया

जागरण संवाददाता, देहरादून: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में जहां उत्तराखंड की चारधाम यात्रा के महत्व को रेखांकित किया, वहीं धामों की गरिमा, सुचिता व पवित्रता बनाए रखने और वहां स्वच्छता के संकल्प को याद रखने की भी अपील की। उन्होंने कहा कि तीर्थ यात्री चारधाम यात्रा की सुखद तस्वीरें इंटरनेट मीडिया पर साझा कर रहे हैं। विशेषकर केदारनाथ धाम में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। लेकिन, इस सबके बीच ऐसी तस्वीरें भी देखने को मिल रही हैं, जिनमें धामों में लगे कूड़े के ढेर स्पष्ट देखे जा सकते हैं। यह निश्चित रूप से चिंताजनक है। हालांकि, ऐसे लोग ने इस बात पर खुशी भी व्यक्त की कि कई संगठन व निजी स्तर पर भी कई लोग स्वच्छ भारत अभियान से जुड़कर धामों में स्वच्छता का कार्य भी कर रहे हैं। इसमें यात्री भी पीछे नहीं हैं, वह अपने ठहरने के स्थानों समेत यात्रा मार्गों पर पड़ा कूड़ा एकत्र कर रहे हैं।

केदारनाथ में चुनौती बना दो क्विंटल कूड़े का उठानः केदारनाथ यात्रा मार्गों पर रोजाना करीब 10 क्विंटल कूड़ा निकल रहा है। इसमें से आठ

PM: Growing startups reflection of new India

Isha Sahai Bhatnagar
letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: Indian startups have been creating wealth even during the Covid-19 pandemic, with new entrepreneurs emerging even from smaller cities and towns, Prime Minister Narendra Modi said in his monthly radio broadcast on Sunday, as he noted that the number of unicorns in the country reached 100 on May 5.

"The total valuation of these unicorns is more than $330 billion, that is, more than ₹25 lakh crore," Modi said in the Mann ki Baat programme. "Certainly, this is a matter of pride for every Indian." Unicorns are startups that are worth $1 billion or more.

"You will also be surprised to know that out of our total unicorns, 44 came up last year. In the 3-4 months this year, 14 more unicorns were formed," the Prime Minister said. "This means that even in this phase of the global pandemic, our startups have been creating wealth and value."

"Something I consider more significant is that the world of startups reflects the spirit of New India," he said. "Today, startups are not confined to metro cities, but entrepreneurs are also emerging from small cities and towns."

Narendra Modi

Modi also stressed the importance of mentoring in startups. "Today, we have ample mentors who are creating a support system for startups in the country. I am confident that in the future, India will reach new heights in the startup world."

In his 89th Mann ki Baat episode, Modi said India is a rich treasure trove of many languages, scripts and dialects. "Varied attire, cuisine and culture in different regions is our hallmark," he said. "As a nation, this diversity strengthens us and keeps us united."

Highlighting examples of diversity, he narrated the journey of Kalpana, who has recently passed her class 10th examination in Karnataka. "The very special thing about Kalpana's success is that she did not know Kannada till some time ago, but she not only learned it in three months, but also proved it by scoring 92 marks."

Modi also cited the example of Shripati Tudu, who hails from Purulia and is a professor of Santhali at the Sidho-Kaano-Birsa University in West Bengal. "Tudu has prepared a version of the country's Constitution in his native Ol Chiki script for the Santhali community," he said. "This is a living example of the spirit of Ek Bharat Shrestha Bharat (one India, great India)."

The upcoming International Yoga Day on June 21 will be celebrated in 75 significant locations across the country, keeping in mind the festivities of Azadi Ka Amrit Mahotsav, or the 75th year of India's Independence, said the PM, who is an avid practitioner.

"This year, Indian missions across the world are taking part in a creative event called Guardian Ring, where the movement of the sun will be celebrated," he added. "From east to west, at sunrise, Indian missions will commence yoga practices."

He also encouraged citizens to support women self-help groups and "promote women's empowerment and give momentum to the Atmanirbhar Bharat abhiyan (self-reliant India mission)".

गोमंतक

'मन की बात' : पंतप्रधान मोदींकडून कामगिरीचे कौतुक

संपत्तीनिर्मितीत 'स्टार्टअप' सक्षम

प्रेरणादायक यशोगाथा

'মন কি বাতে' আঞ্চলিক ভাষায় জোর মোদির

ജപ്പാൻ ജനതയുടെ മനസ്സിലും ഭാരതം: പ്രധാനമന്ത്രി

PM મોદીની સ્ટાર્ટઅપ, સ્વચ્છતા અને યોગ દિવસ મુદ્દે મન કી બાત

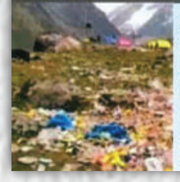

Modi thanks Thanjavur SGH for gift

New Delhi, May 29: Highlighting the creativity and artistic talent of the people of the country, Prime Minister Narendra Modi in his monthly 'Mann ki Baat' radio broadcast on Sunday talked about a gift sent to him by a self-help group from Thanjavur, Tamil Nadu.

"This gift bears the fragrance of Indianness and the blessings of Matri-Shakti – a glimpse of her affection for me. This is a special Thanjavur doll, which also has a GI tag. I offer special thanks to the Thanjavur self-help group for sending me this gift imbued in the local culture," Modi said.

"I also urge the listeners of 'Mann Ki Baat'...find out which women self-help groups are working in your area. You should also collect information about their products and use these products as much as possible," he said. — *PTI*

మన స్టార్టప్‌లు సూపర్

ମୋଦୀଙ୍କ ମନ୍ କି ବାତ୍

'ବିବିଧତା ଆମକୁ ସଶକ୍ତ ଓ ଏକଜୁଟ୍ କରିଛି'

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में गंदगी पर दुख जताया

चारधाम में गंदगी न फैलाएं : मोदी

भाषाएं-बोलियां और खान पान देश की शक्ति : पीएम

सलाह और सराहना

PM: Startups Created Value, Wealth Even in a Pandemic

'Entrepreneurs emerging from small towns show that in India anyone can innovate, create wealth'

Growth Path

योग, स्वच्छता और स्टार्ट अप पर दिया जोर, भाषा को सराहा पुरजोर

मन की बात के 89वें प्रसारण में पीएम मोदी ने दिया उद्बोधन

Modi hails SSLC student from Mysuru

Mysuru: During the 89th episode of his 'Mann Ki Baat', Prime Minister Narendra Modi praised an SSLC student from Mysuru who secured 514 marks, with 92 marks in Kannada even though she hails from Uttarakhand.

"I wish to share with all of you a very inspiring example related to this, which is that of beti **Kalpana.** Her name is Kalpana but her endeavour is full of the true spirit of 'Ek Bharat Shreshtha Bharat'... Kalpana recently passed her class 10 exam in Karnataka, but the very special thing about her success is that Kalpana did not know Kannada language till some time ago. She not only learned Kannada in three months, but also proved it by scoring 92 marks," the PM said. "Kalpana is originally from Joshimath in Uttarakhand. She had been suffering from TB earlier and when she was in class 3, she lost her eyesight too. But, as they say, where there is a will, there is a way. Kalpana later came in contact with Professor Taramurthy, a resident of Mysuru, who not only encouraged her but also helped her in every way. Today, through her hard work, she has set an example for all of us...," he said. TNN

মোদীর মুখে 'ইউনিকর্ন'

নয়াদিল্লি, ২৯ মে: করোনার মধ্যেও দেশে গত বছরে ৪৪টি স্টার্ট-আপ ইউনিকর্ন সংস্থা (বাজারদর ১০০ কোটি ডলারের বেশি) তৈরি হয়েছে বলে জানালেন প্রধানমন্ত্রী নরেন্দ্র মোদী। সব মিলিয়ে সংখ্যা ১০০টিরও বেশি। রবিবার মন কি বাত অনুষ্ঠানে তিনি বলেন, "ক্রিকেটে ব্যাটসম্যানের সেঞ্চুরির কথা শুনলে আনন্দ হয়। ক'দিন আগে সে রকমই এক নজির গড়েছে ভারত।" সব মিলিয়ে এই সমস্ত ইউনিকর্ন সংস্থার বাজারদর ৩৩,০০০ কোটি ডলার বা ২৫ লক্ষ কোটি টাকার বেশি বলেও দাবি তাঁর। সংবাদ সংস্থা

ਭਾਰਤ ਕਈ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ, ਲਿੱਪੀਆਂ ਤੇ ਉਪ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਦਾ ਖਜ਼ਾਨਾ-ਮੋਦੀ

ਕਿਹਾ, ਤੀਰਥ ਸਥਾਨਾਂ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਬਰਕਰਾਰ ਰੱਖਣ ਦੀ ਲੋੜ

ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕੀਤੀ 'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ'

केदार में गंदगी पर PM ने दुख जताया

■ पीटीआई, नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात कार्यक्रम में केदारनाथ धाम में गंदगी पर दुख जताया। मोदी ने कहा कि केदारनाथ में कुछ लोगों के गंदगी फैलाने से श्रद्धालु बहुत दुखी हैं। हम पवित्र यात्रा पर जाएं और वहां गंदगी का ढेर हो, यह ठीक नहीं है। वहीं, कई भक्त ऐसे भी हैं जो पूजा के साथ अपने ठहरने की जगह के पास सफाई कर रहे हैं तो कोई यात्रा मार्ग से कूड़ा हटा रहे हैं।

PM lauds start-ups' role during Covid

PRESS TRUST OF INDIA
New Delhi, May 29

You will be surprised to know that out of our total unicorns, 44 came up last year ... 14 more were formed anew in three-four months this year.

— NARENDRA MODI
PRIME MINISTER

Noting that the number of unicorn companies in India has reached the 100 mark this month, Prime Minister Narendra Modi on Sunday said even during the pandemic Indian start-ups have been creating wealth and value, with entrepreneurs emerging from smaller cities and towns as well.

In his monthly 'Mann ki Baat' radio broadcast, the prime minister said that on the fifth of this month, the number of unicorns in India reached the 100-mark.

"A few days ago, the country has made an achievement, which inspires all of us ... instils a new confidence in India's prowess. You must be feeling happy on hearing of the century of a batsman of Team India on the cricket field. But, India has scored a century in another field and it is very special," he said, highlighting the number of such start-ups reaching the important milestone.

The total valuation of these unicorns is more than \$330 billion, which is more than ₹25 trillion, he said, adding this is a matter of pride.

"You will also be surprised to know that out of our total unicorns, 44 came up last year. Not only that, 14 more unicorns were formed anew in three-four months this year. This means that even in this phase of the global pandemic our start-ups have been creating wealth and value," he said.

Modi also said the average annual growth rate of Indian unicorns is more than those in the US, UK and many other countries. Noting that the unicorns are diversifying, Modi said they are operating in many fields like e-commerce, fin-tech, ed-tech and bio-tech.

"Another thing which I consider important is that the world of start-ups is reflecting the spirit of New India. Today, India's start-up ecosystem is not limited to just big cities; entrepreneurs are emerging from smaller cities and towns as well. This shows that in India, the one who has an innovative idea, can create wealth," he said.

पीएम ने की मन की बात

जीवन की कमाई गांव को मीठा पानी देने पर लगा दी

चार धाम यात्रा करें, लेकिन गंदगी न फैलाएं

THE HINDU

Diversity strengthens us, says Modi

NBT नवभारत टाइम्स

वैश्विक महामारी में भी भारतीय स्टार्टअप का मूल्यांकन और धन बढ़ा है: प्रधानमंत्री मोदी

The Shillong Times

Let us maintain dignity of pilgrimage sites: Modi

पत्रिका

मन की बात: पीएम मोदी ने तंजावुर के महिला नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूह की सराहना की

Outlook

Choose Special Place In Your City, Town Or Village To Celebrate Yoga Day: PM To People

पंजाब केसरी

'मन की बात' में PM मोदी ने किया चारधाम यात्रा का जिक्र...बोले- "केदारनाथ जाएं, पर गंदगी न फैलाएं"

The Tribune

'Mann ki Baat': Indian startups created value, wealth even during Covid pandemic, says PM Modi

आज तक

PM Modi Mann Ki Baat: पीएम मोदी ने अपने जापान दौरे का सुनाया ये किस्सा, देखें महाभारत प्रोजेक्ट के बारे में क्या बताया